आओ चले समस्या रूपी बादलो से पार

अनुक्रमणिका

- राजयोग की परिभाषा
- राजयोग की विधी
- राजयोग के फायदे

भाग 1 – समस्यायें

- समस्या की परिभाषा
- समस्यायें कौन कौनसी आती है
- समस्यायें क्यों आती है
- समस्याओंके समय अकसर किन शब्दों का प्रयोग करते

भाग 2 – समाधान

- राजयोग द्वारा कॉमेंट्री
- भिन्नभिन्न परिस्थितियों के लिए अलगअलग स्वमान
- सुविचार, स्लोगन
- कहानियां (संदर्भित)
- चित्रकविता
- समस्यामें कौनसे प्वांईट्स सोचने है
- बाबा की मुरली के प्वांईट्स
- वरिष्ठ भाईबहनों के क्लासेस एवं अनुभवों के ज्ञान बिंदुओं का संकलन

भौतिक आपदायें

- विजली की समस्या
- मिसाईल्स वॉम्वस् की समस्या
- साधनों की समस्या - टेलिव्हीजन
- प्रदुषण - ध्वनी वायु जल

प्राकृतिक आपदायें

- पानी की समस्या
- नैसर्गिक समस्या - भूकंप अतिवृष्टि वादळ त्सुनामी आग वाढ़ ओझोन लेयर में कमी
- मौसम की समस्या - ठंड़ी गर्मी वारीश

ब्राह्मण परिवार

- युनिफॉर्म
- खानपान नियम
- नियम - दो वार स्नान
- सेवा
- पवित्रता
- भोग लगाने की समस्या
- सेंटर पर सेवा
- सेवाधारियों की कमी

परिवारिक समस्या

- सास - वहु समस्या
- वच्चों की समस्या
- लड़की पैदा होने की समस्या
- वच्चे होना - नही होना
- शादी होना - नही होना
- प्रॉपर्टी झगड़ा

व्यक्तिगत समस्या

- तन की विमारी -
- मन की विमारी - निगेटिव्ह थिंकिंग परचिंतन व्यर्थ
  संकल्प व्यर्थ सपने निंद कर्मज्यादा आना
- स्वभार्वसंस्कार - ईर्ष्याद्वेष मार्नअपमान चिड़चिड़ापन
  कोध ज्यादा वोलना कम वोलना कर्तव्य से मूँह मोड़ना
  पोर्स्टपोजिशन अविश्वास
- खार्नपान की समस्या - कर्मज्यादा खाना
- फॅशन समस्या - गहिने कपडे
- साधनों की समस्या
- अलवेलापन
- निर्णय शक्ति की कमी अष्टशक्तियों की कमी
- विधवा होने की विदूर होने की समस्या
- कामवाली वाई की समस्या
- वील ज्यादा आना भरना
- किड़े चीटी डास प्राणियों से समस्या
- कुछ वातें याद न रहना
- किसी की भी सहायता करने पर हमारे उपर समस्या
- अपमान

सामाजिक समस्या

- विकार - काम क्रोध लोभ मोह मत्सर देहअभिमान
- बढ़ती लोकसंख्या
- प्रदूषण
- देशों की लढ़ाई
- भाषा की समस्या अनेक भाषा
- जातीय वाद
- रीति रीवाज
- पडोसीयोंकी समस्या
- अंधश्रद्धा
- पोर्तेधोते की समस्या
- ट्राफिक

आर्थिक समस्या

- महंगाई
- गरीबी - धन की कमी झूठ बोलना चोरी करना
- बेकारी
- रिश्वत लेना देना
- इनकम टॅक्स

शैक्षणिक समस्या

- ज्यादा पढ़ाई कम पढ़ाई
- डोनेशन
- प्राइव्हेट क्लासेस

समस्याओं में सोचने के प्वाइंटस्

1. ड्रामा में नूँध है – रोल फिक्स है ड्रामा फिक्स है
2. भगवान ह्यवावाह को साथ रखना
3. हिसाव किताव चुक्त हो रहा है
4. विकर्मों का विनाश
5. नथिंग न्यु
6. स्वस्थिती
7. मुझे वदलना है
8. स्वमान
9. अपना दृष्टिकोन वदलना
10. सत्यता
11. अटेन्शन – केअरफुल सक्सेसफुल पावरफुल चिअरफुल
12. हर वात में कल्याण है
13. अष्टशक्ति
14. मैं वुजुर्ग आत्मा हूँ
15. समय की पुकार(Awarness of time aspects)
16. हर एक की विचारधारा अलग है पहले उसे जानो फिर समझाओ(Always respond after knowing & understanding others sanskar)
17. युक्तियुक्त वातें वताओ
18. स्वउन्नति में ध्यान दो (Attention on self development, not bother about name & fame)
19. निराकारी निर्विकारी निरहंकारी

स्वमान

- मैं विघ्न विनाशक हूँ।
- मैं आधारमूर्त हूँ।
- मैं उद्धारमूर्त हूँ।
- मै मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।

स्लोगन

- तूफान एक तोहफा है।
- हिम्मते वच्चे मददे वाप।
- सच की नांव हिलेगी डूलेगी लेकिन डूवेगी नहीं।
- राई को पहाड नही वनाना।
- भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं।

• सहयोग न मिलना	त्याग वृत्ती
• सम्वन्ध सम्पर्क से	नम्रता निर्दोश दृष्टिकोन
• किसी दुसरे की मदद् करने पर अन्य द्वारा	ड्रामा साक्षीपन का भाव
• स्वभाव संस्कार के टकराव के कारण	धैर्यता 10 वार दुवाये दो
• निंदा	शितलता मेरा भला करने का भाव निंदकाचे घर असावे शेजारी
• प्रतिस्पर्धा	भविष्य 21 जन्मों के आगे यहा के सांसारीक वैभव वस्तुओं को कौडी तुल्य समझना अर्थात समभाव
• अपेक्षाए	ईच्छा मात्रम अविद्या का पाठ पक्का करना
• जिदद्	स्नेह भाव सहानुभूती उदारता
• अनावश्यक दवाव राजनैतिक धार्मिक सामाजीक	निर्भयता अथक सेवाधारी स्पष्टता गम्भीरता
• ट्राफिक	संगमयुगी जीवन अमुल्य जीवन है। दुर्घटना से देर भली।
• नैचरल कलैमिटीज	
1 स्वयं के प्रति होनेपर	ड्रामा व वावा पर अटल निश्चय
2 दुसरों के प्रति होने पर	सकाश देना
• वेरोजगारी	पूरा पुरूषार्थ करना है जो ड्रामा में होगा ऐसा कहकर अलवेले नही होना है। पूरा पुरूषार्थ करने पर भी फल नही मिलता तो साक्षीभाव रखना।
•	

कारण

निवारण

21/3/85

परिस्थितियां:-

अब कोर्स को फिर से रिवाइज करना एक-2 प्वाइंट में क्या-2 शक्ति है, कितनी शक्ति है, किस समय कौन सी शक्ति को किस रुप में यूज कर सकते हैं, यह ट्रेनिंग स्वयं भी स्वयं को दो। तो यह चेक करो- आत्मा के प्वाइंट रुपी शक्तिशाली शस्त्र सारे दिन में कार्य में लाया। एक-2 प्वाइंट को देखो परिस्थिति के समय कहां तक कार्य में लाते हैं। यह नहीं सोचो वैसे तो ठीक रहते, लेकिन ऐसी बात हो गई, परिस्थिति आई तब ऐसा हुआ। शस्त्र किसलिए होता है। जब दुश्मन आता है उसके लिए होता है या दुश्मन आ गया इसलिए मैं डर गया। माया आ गयी इसलिए डगमग हो गयें। लेकिन माया के लिए ही तो शस्त्र है न शक्तियां किस लिए धारण की हैं? समय पर विजय पाने के लिए शक्तिशाली बने हो ना ।सदा निविध्न रहना और विध्न निर्विध्न चलता रहे फर्क तो है ना धागे में जितनी गांठ पडती जाती है धागा उतना कमजोर होता जाता है। जुड तो जाता है लेकिन जुडी हुई चीज और साबुत चीज में फर्क तो होता है ना। तो यह विध्न आया फिर निविध्न बने, फिर विध्न आते टूटा जोडा तो जोड तो हुए न इसलिए भी इसका प्रभाव अवस्था पर पडता है।

11/4/85

संकल्प की निशानी कंगन बांधते हैं। तो यह प्रतिज्ञा करें न समस्या बनेंगे न समस्या को देख डगमग होंगे। स्वयं में भी समाधान स्वरुप और दूसरों को भी समाधान देने वाले होंगे।

6/1/86

सेवा में अभिमान और अपमान का एलॉय मिक्स न हो। जरा भी पुराने संस्कारों का एलॉय न हो। ऐसे नहीं आजकल चांदी के उपर सोने का पॉलिश चढा देते हैं। बाहर से तो सोना लगता है पर अंदर मिक्स। स्वभाव में ईष्या, सिद्ध और जिद का भाव न हो। यह है एलॉय। इस एलॉय को समाप्त कर गोल्डन एजड स्वभाव वाला बनों। संस्कार में सदा हॉं जी । जैसा समय, जैसी सेवा, वेसे स्वयं को मोल्ड करना है अर्थात रियल गोल्ड बनना है। वर्ष का आरंभ गोल्डन एज्ड स्थिति से करो। सुनने के समय तो समझते हैं कि करना ही है लेकिन जब समस्या सामने आती है सब सोचते यह तो बडी मुश्किल बात है समस्या के समय स्वराज्य अधिकारी पन का अधिकार दिखाने का समय ही होता है। वार के समय ही विजयी बनना होता है । परीक्षा के समय ही नम्बर वन लेने का समय होता है। समस्या स्वरुप नहीं बनो। समाधान स्वरुप बनो।

18/2/86

हर घडी विश्व कल्याण प्रति समर्पित करो। विश्व कल्याण में स्व कल्याण स्वतः ही समाया हुआ है। जब संकल्प और सैकेण्ड सेवा में विजी रहेंगे फुरसत नहीं होगी तो माया को भी आपके पास आने की फुरसत नहीं होगी। समस्यायें समाधान के रुप में परिवर्तित हो जायेंगी।समाधान स्वरुप श्रेष्ठ आत्माओं के पास समस्या आने की हिम्मत नहीं रखती।अच्छी स्थिति से जब सेवा में विजी रहते हैं तो सेवा की खुशी से उस समय तक समस्यायें स्वतः ही दब जाती हैं। क्योंकि समस्याओं को सोचने की फुरसत ही नहीं। हर सैकेण्ड से बाप में विजी रहेंगे तो समस्याओं का लंगर उठ जायेगा। आप औरों को बाप का खजाना देने के निमित बनो। तो कमजोरियों का किनारा स्वतः ही हो जायेगा। तो अब समाधान स्वरुप बनों।

स्नेह में तो सभी पास मार्कस लेने वाले हैं बाकी समाधान स्वरुप की माला तैयार होनी हैं। समपूर्ण अर्थात समाधान स्वरुप। जैसे ब्रहमा बाप को देख समस्या ले जाने वाला समस्या भूल जाता था। सम्पूर्ण स्थिति के आगे समस्या बचपन का खेल लगती है। इसलिए समाप्त हो जाती है। इसको कहते हैं समाधान स्वरुप। एक-2 समधान स्वरुप हो जायें तो समस्यायें कहां जायेंगी। अभी तो विश्व

की समस्याओं का समाधान ही परिवर्तन है। जो मोल्ड होता है वह जिस भी रुप में लेना चाहो उस रुप में आ सकता है। मोल्ड अर्थात सबका प्यारा होना। सबकी नजर फिर निमित बनने वालों पर होती है।

22/2/86

सेवा धारी किसको कहा जाता है? सेवा स्थिति को डगमग करें वह सेवा नहीं हैं। सेवा में नीचे उपर भी बहुत होते हैं। विध्न भी सेवा में ही आते हैं और निविध्न भी सेवा ही बनाती है। लेकिन जो सेवा विध्न रुप बने वह सेवा नहीं। उसको सच्ची सेवा नहीं कहेंगे। नाम धारी सेवा कहेंगे। सच्ची सेवा सच्चा हीरा है। जैसे सच्चा हीरा कभी चमक से छिप नहीं सकता ऐसा सच्चा सेवाधारी सच्चा हीरा है। जब ब्राहमण अपने को कंगन बांधेंगे तभी औरों को बांध सकेंगे। इसलिए संकल्प करो कि हम समस्या स्वरुप नहीं बनेंगे। तो यह कंगन बांधना पसंद है ना। पहले स्व फिर विश्व। स्व का प्रभाव विश्व पर पडता है जहां लगन है वहां विध्न आते ही समाप्त हो जायेंगे।

25/2/86

दृढ संकल्प करो कि चाहे कुछ भी हो जाये माया के तूफान चाहे लोगों की भिन्न-2 बाते आयें, चाहे प्रकृति का काई भी हलचल का नजारा हो। चाहे लौकिन व आलौकिक संबंध में किसी भी प्रकार के सरकमस्टांस हों मन के संकल्पों का बहुत जोर से तूफान भी है तो भी एक बाप दूसरा न कोई। एक बल एक भरोसा ऐसा दृढ संकल्प हो।

4/3/86

निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है। आगे चलकर ऐसे पेपर भी आयेंगे जो सूखी रोटी भी खानी पडेगी लेकिन निश्चय नशा और योग से सिद्धि की शक्ति सूखी रोटी को भी नम बना देगी।

9/4/1986

याद की छत्रछाया सर्व विध्नों से सेफ कर देती है। किसी भी प्रकार का विध्न छत्रछाया में रहने वाले के पास टहर नहीं सकता। छत्रछाया से बाहर पांव भी निकाला तो माया वार कर लेगी। किसी भी प्रकार की छत्रछाया आवे, छत्रछाया में रहने वाले को मुश्किल से मुश्किल बात भी सहज हो जाऐगी।

23/1/1987

आज विश्व में जितनी भी मुश्किलातें हैं उसका कारण ही है कि एक दो को रुह नहीं समझते। देखते। देह अभिमान के कारण सब समस्यायें हैं। देही अभिमानी बन जायेंगे तो सभी समस्यायें खत्म हो जाएंगी।

18/12/1987

कर्मातीत स्थिति वाला देह के मालिक होने कारण कर्मभोग होते हुए भी न्यारा बनने का अभ्यासी है। बीच-2 में अशरीरी स्थिति का अनुभव बीमारी से परे कर देता है जैसे साइंस के साधन द्वारा बेहोश कर देते हैं तो दर्द होते भी भूल जाता है। दर्द फील नहीं करते क्योंकि दवाई का नशा होता है। तो कर्मातीत अवस्था वाले अशरीरी बनने के अभ्यासी होने कारण बीच-2 में रुहानी इंजैक्शन लग जाता है। इस कारण सूली से कांटा हो जाता है(अनुभव होता है) और बात, फौलो फादर होने कारण विशेष आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्ष फल बाप से विशेष दिल की दुआयें प्राप्त होती हैं। एक अपना अशरीरी बनने का अभ्यास दूसरा आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्ष फल, बाप की दुआयें, यह बीमारी अर्थात कर्मभोग को सूली से कांटा बना देती है। कर्मातीत श्रेष्ठ आत्मा कर्मभोग को कर्मयोग की स्थिति में परिवर्तन कर देगी।

7/8/1989

किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात धारणा प्रति कुछ त्याग करना पडे, सहन करना पडे, साहस रखना पडे तो खुशी खुशी से करेंगे।

11/11/1989

सदैव ऐसे इजी रहो, जैसा समय, जैसी परिस्थिति, जो भी कार्य मिलता है हर समय हर कार्य में सदा इजी रहें। जिसके संस्कार इजी रहने के होते हैं उनको हर कार्य सहज अनुभव होता है। संस्कार टाइट तो सरकमस्टांश भी टाइट हो जाते हैं। संबंध सम्पर्क वाले भी टाइट व्यवहार करते हैं। टाइट अर्थात खींचातान में रहने वाले। ड्रामा के हर दृश्य को देख हर्षित रहने वाले हो न। न अच्छे में न बुरे में, किसी में आकर्षित नहीं होना है, सदैव हर्षित रहना है।

19/11/1989

किसी भी परिस्थिति में ज्ञान अर्थात् लाइट की कमी न हो और माइट अर्थात् योग की कमी नहीं हो। अगर एक की भी कमी है तो परिस्थिति में सैकण्ड में पास नहीं हो सकेंगे, टाइम लग जाएगा।

23/11/1989

खुशी जन्म सिद्ध अधिकार है। खुशी के वरदान को खोना नहीं है। समस्या आएगी और जाएगी पर खुशी नहीं जाए। क्यों कि खुशी हमारी चीज है, समय पर स्थिति दूसरे के तरफ से आई हुई है। अपनी चीज को सदा साथ रखते हैं, पराई चीज तो आएगी भी और जाएगी भी।परिस्थिति माया की है अपनी नहीं । तो खुशी को खोना नहीं है, चाहे यह शरीर चला जाए पर खुशी न जाए। डरना नहीं कि पता नहीं क्या बनेंगे।

27/11/1989

चाहे बाहर की परिस्थिति हल चल की है लेकिन एकांत प्रिय आत्मा एक के अंत में सैकण्ड में एकाग्र हो जाएगी। जब एक के अंत में सागर के अंत में चले जाएंगे तो हलचल समाप्त हो एकाग्र बन जाऐंगे।

21/12/1989

चाहे कोई स्वयं निर्विघ्न हो लेकिन अगर सेंटर पर बार बार विघ्न आते है। तो उसमें भी समय देना पडता है। वायुमण्डल बदल जाता है। तो क्यों नही ऐसे पवर फुल वातावरण बनाओ जो विघ्न सदा कमजोर रहें और आप सदा सर्वशक्ति वान रहो। जब प्रकृति की शक्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकती है, गर्म को ठण्डा बना सकती है, ठण्डे को गर्म बना सकती है तो आप क्यों नहीं कर सकते। तो वायुमण्डल को पावर फुल बनाओ। क्योंकि सेवा ही वह है कि पहले स्वंय को निर्विघ्न बनाना है टोर फिर औरों को भी निर्विघ्न बनाना है। सेवा लेने वाले नहीं सेवा धारी हो। अगर बहुत समय विघ्नों के वश होते रहोगे तो अंत में निर्विघ्न नहीं रहेंगे इसलिए बहुत काल की निर्विघ्न अवस्था चाहिए। तो अभी विघ्नों को आने नहीं देना। कमजोर आत्माओं को भी बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्ति दे शक्तिशाली बना लो यही श्रेष्ठ सेवा है। परिचय देना, कोर्स कराना यह कोई बडी बात नहीं है लेकिन आत्माओं को शक्तिशाली बनाना यही सच्ची सेवा है। हिम्मत आप रखेंगे और मदद बाप करेगा।

25/12/1989

जो रोज अमृत बेले दिल खुशी मिठाई खाते हैं वो स्वयं भी सारा दिन खुश रहते हैं ओर देसरे भी उनको देख खुश होते हैं। यह ऐसी खुराक है जो कोई भी परिस्थिति आ जाए लेकिन यह दिल खुश खुराक परिस्थिति को छोटा बना देती है। पहाड को राई बना देती है। जैसे शरीर के हिसाब से भी जो तंदरुस्त वा शक्तिशाली होगा वह हर परिस्थिति को सहज पार करेगा। कमजोर के

आगे परिस्थिति बडी हो जाती है शक्तिशाली के आगे परिस्थिति पहाड से रुई बन जाती है इतनी ताकत है दिल खुश मिठाई में। तो रोज दिल खुश मिठाई खाना।

2/01/90

इस स्मर्थ जीवन का आधार है स्मृति - कोई भी परिस्थिति आ जाए लेकिन स्मृति स्वरुप आत्मा स्मर्थ होने कारण परिस्थिति को क्या समझाती। यह खेल है कभी धरायेगी नहीं। भल कितनी भी बडी परिस्थिति हो लेकिन समर्थ आत्मा के लिए मंजिल पर पहुंचने के लिए यह सब रास्ते के साइड सीन्ज हैं। अर्थात रास्ते के नजारे हैं। साइड सीन्ज तो अच्छी लगती है ना। खर्चा करके भी साइड सीन देखने जाते हैं।ऐसे स्मृति स्वरुप समर्थ स्वरुप आत्मा के लिए परिस्थिति कहो, पेपर कहो, विघ्न कहो, प्रोब्लम्ज कहो सब साइड सीन्ज हैं। स्मृति में है कि वह मंजि के साइड सीन्ज अनगिनत बार पार भी हैं नंथिंग न्यू।

जितना न्यारे उतना बाप के पयारे बनेंगे। स्वतः ही बाप का प्यार अनुभव होगा। और यह प्यार छत्रछाया बन जायेगी। जिसके उपर छत्रछाया है उसको कोई क्या कर सकता है। इसलिए फरतूर में रहो कि हम छत्रछाया में रहने वाले हैं। बॉडी कान्सस होगा तो अभिमान आएगा, आत्म अभिमानी होंगे तो अभिमान नहीं आयेगा, लेकिन रुहानी फरतुर होगा। और जहां फरतुर होता है वहां विघ्न नहीं आ सकता । या तो है फिकर या है फरतूर। दोनों साथ नहीं होते । दाल रोटी अच्छे ते अच्छी देने के लिए बाप दादा बंधा हुआ है।

10/01/90

बाप दादा कहते अपनी परखने की शक्ति को बढाओ। अपने कर्मो को भी परख सकते हैं और दूसरे के कर्मो को भी यथार्थ परख सकेंगे। उल्टे को सुल्टा नहीं कहेंगे। यह परखने की शक्ति भी कर्म है। और सदा एक बात याद रखो-सबके लिए कह रहे हैं। कभी भी ऐसा व्यर्थ वा साधारण कर्म करते हो और अपने आपको पहचान नहीं सकते हो कि यह राईट है या रॉग है। तो जब ऐसी परिस्थिति आती है वशभूत हो जाते हैं तो उस समय ऐसी परिस्थिति में सिद्धि को प्राप्त करने की श्रेष्ठ विधि कया है? क्योंकि उस समय अपनी बुद्धि तो वशीभूत है। राइट को भी रॉग समझते हैं रॉग को रॉग नहीं समझते हो , राइट समझते हो। फिर जिद करेंगे या सिद्ध करेंगे। यह निशानी है वशीभूत आत्मा की बुद्धि की। ऐसे समय पर सदैव एक बाप दादा की श्रेष्ठ मत याद रखो कि जिन्हों को बाप ने निमित्त बनाया है वह निमित्त आत्मायें जो डाइरेकशन देती हैं उसको महत्व देना चाहिये। निमित्त बने हुए श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा अगर कोई बुरी बात भी होगी तो आप जिम्मेदार नहीं। आप का काम टीक हो जाएगा क्योंकि बाप बैठा है। बाप, पाप को बदल देगा। यह गुढय रहस्य है। इसमें आपका फायदा है यह बाप की गारंटी है।

31/3/90

कोई भी बात हो जाए, कोई भी समस्या आ जाए लेकिन संतुष्टता नहीं जाए। बात आएगी भी और चली जाएगी लेकिन संतुष्टता को नहीं जाने दो क्योंकि यह अविनाशी खजाना है, बाप का वर्सा है, यह संतुष्टता का खजाना आपको हर समय भरपूरता का अनुभव कराता रहेगा। संतुष्टता सभी गुणों को स्वतः ही जाती है जिसके पास संतुष्टता है उसके पास और गुण भी अवश्य होंगे, गुणों की खन हो जाती है।

24/5/90

बाबा देख रहे हैं कि संसार की हालत तो नाजुक है ही लेकिन संसार की हालत के साथ-2 बच्चे भी पुरुषार्थ में बहुत नाजुक हैं कोई शरीर से नाजुक कोई पुरुषार्थ में नाजुक पुरुषार्थ में नाजुक किस हिसाब से है? फास्ट गति के संकल्प करके चलते हैं लेकिन जब सामने कोई बात आती है तो इसमें नाजुकपन यह आता है कि चल तो रहे हैं। लक्ष्य तो अच्छा है, चाहते तो हैं करेंगे जरुर यह

तो होता ही है ना यह तो चलता ही है, यह तो होगा ही। बुद्धि में यह नहीं आता कि इतने को खत्म करके सम्पूर्ण बने। यह नाजुकपन के संकल्प आते हैं तो कोई न कोई परिस्थिति का भारी पन आ जाता है। सोचते हैं मेरे में इतनी ही हिम्मत है इतना ही चल सकती है यह नाजुक पन है। इसके बजाए मुझे इसे पार कर सम्पन्न बन कर दिखाना है। यह है शक्तिशाली संकल्प।

2/1/1990

स्वस्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते हैं स्वस्थिति अर्थात आत्मिक स्थिति । परिस्थिति व्यक्ति वा प्रकृति द्वारा आती है। अगर स्वस्थिति शक्तिशाली है तो उसके आगे परस्थिति कुछ भी नहीं।

19/3/1990

सभी समस्याओं का मूल कारण कनेक्शन लूज होना है सिर्फ कनेक्शन को ठीक कर दो तो सर्वशक्तियां आपके आगे घूमेंगी। अगर कनेक्शन जोडने में एक दो मिनट लग जाते हैं तो हिम्मत हार कर कन्फयूज न हो जाओ। बातें बहुत छोटी-2 होती हैं पर कमजोर होने कारण बडी लगती हैं तो उमंग उत्साह के पंख उडाते रहो। रोज अमृत बेले अपने सामने सारा दिन किस स्मृति में उमंग उत्साह में रहे- वह वराइटी उमंग उत्साह की पाइंटस इमर्ज करो। डायरी में भी नोट करो तो बृद्धि में भी इमर्ज करो और वरायटी पावंट हर रोज नया उमंग उत्साह बढायेंगे।बाकी बापदादा, ब्राहमण परिवार, ड्रामा, संगमयुग का समय सब आपकी सफलता में मददगार है आपके चारों तरफ शक्तिशाली है।

25/2/91

कैसी भी परिस्थितियां हों लेकिन परमात्म प्यार के आगे परिस्थितियां रोक नहीं सकती। परमात्म प्यार बुद्धिमानों की बुद्धि बन परिस्थिति को श्रेष्ठ स्थिति में बदल लेता है। कई सोचते हैं अंत में विमान बंद हो जायेंगे फिर हम कैसे जायेंगे। परमात्म प्यार में वह शक्ति है जो किसी को आंखों में ऐसा जादू कर देगी जो आपको भेजने के लिए परवश कर देगी। लेकिन सिर्फ प्यार करने वाले नहीं लेकिन निभाने वाले हो। निभाने वाली आत्माओं से बाप का वायदा है- अंत तक हर समस्या को पार करने में प्रीति की रीति निभाते रहेंगे। कभी-2 प्रीत करने वाले नहीं बनना। प्रीत करना अनेकों को आता है लेकिन निभाना कोई-2 को आता है।

3/4/91

सदैव स्मृति में रखो कि हम महावीर हैं, शिव शक्तियां हैं, तो कभी भी निर्बल नहीं होंगे, कमजोर नहीं होंगे। क्योंकि कोई भी विध्न तब आता है - जब कमजोर बनते हैं। अगर कमजोर नहीं बनो तो विध्न नहीं आ सकता। महावीर को कहते हैं विध्न विनाशक।

26/10/91(मुलाकात)

गुलाब के पुष्प की यही विशेषता है कि कांटों में रहते भी कांटों से उँचा रहता है। चाहे कितने भी कांटों हों लेकिन गुलाब सदा उपर रहता है । कांटों के कारण उपर उठने में रुकता नहीं। कांटो के बीच घिरा हुआ खुशबू फैलाने वाला होता है। आप सभी भी ऐसे हो ना। कांटे काटते नहीं हैं रक्षक बन जाते हैं आप रुहानी गुलाब के आगे कितनी भी परीक्षाओं रुपी कांटे आते हैं लेकिन आपको बहुत मजबूत बनाते हैं। कभी घबराने वाले तो नहीं बनते हो? परीक्षायें अनुभव और ऑथोरिटी वाला बना देती हैं। जैसे स्थूल आयु में भी जितना कोई अपनी आयु से बातों को क्रास करता है और बडा बनता है तो कहते हैं मैं अनुभवी बन बडा हुआ हुं। ऑथारिटी से कहते हैं। ऐसे जो जिना परीक्षायें पास करता है वह भी ऑथारिटी से कहता है- मैं सब जानता हूं, मुझे सब अनुभव है। तो अनुभव ऑथारिटि बन गई ना। तो कभी भी किसी समस्या को समस्या नहीं

समझना यह अनुभव बढ रहा है। परिपक्व हो रहे हैं। तो अनुभवी बनने की खुशी में रहना घबराना नहीं।

18/12/91(मुलाकात)

हर परिस्थिति में अधिकार से शक्ति यूज करो, हर गुण को यूज करो, जिस परिस्थिति मे धैर्यता चाहिए, तो धैर्यता के गुण को यूज करो।

18/1/1992

सदा हर समय हर एक आत्मा से, हर परिस्थिति में स्नेही मूर्त भव। कभी भी अपनी स्नेही मूरत, स्नेही की सीरत, स्नेही व्यवहार, स्नेह के संबंध सम्पर्क को छोडना मत, भूलना मत। चाहे कोई व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे माया कैसा भी विकराल रुप, ज्वाला रुप धारण कर सामने आए लेकिन विकराल ज्वाला रुप को सदा स्नेही शीतला द्वारा परिवर्तन करते रहना।

18/01/92

लास्ट समय चारों ओर व्यक्तियों का, प्रकृति का हलचल ओर आवाज होगा- चिल्लाने का हिलाने का वायुमण्डल होगा। ऐसे समय पर ही सैकण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूं- यह अभ्यास ही विजयी बनाएगां

13/2/92

सच्चा प्यार अर्थात् एक दो से तन से वा मन से अलग न हों, न अलग हो सकते हैं, न कोई अलग कर सकता है। चाहे सारी दुनिया को सर्व करोडों आत्मायें प्रकृति, माया परिस्थितियां अलग करना चाहें, किसी ताकात नहीं जो इस परमात्म मिलन से अलग कर सके। इसको कहा जाता है सच्चा प्यार। प्यार को मिटाने वाले मिट जायें लेकिन प्यार मिट नहीं सकता। ऐसे पक्के सच्चे प्रेमी हो।

13/10/92

ड्रमा की हर बात को परखने की बुद्धि चाहिये। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर होती है। परिस्थिति सामने आवे और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति तब कहेंगे निश्चय बुद्धि विजयी। तो तीनों में पक्का निश्चय चाहिए- बाप में अपने आप में और ड्रामा वाह। उस समय चिल्लायेंगे या - वाहा वाह कहेंगे? हाय बाबा बचाओ यह नहीं कहेंगे? जब निश्चय है तो निश्चय का अर्थ ही है - संशय का नाम निशान न हो। कुछ भी हो जाए लेकिन अटल अचल निश्चय बुद्धि को कोई भी परिस्थिति हलचल में नहीं ला सकती। क्योंकि हलचल में आना अर्थात् कमजोर होना। सदा वजय का तिलक मस्तक पर लगा हुआ हो।

12/11/92

कैसा भी वातावरण हो कैसी भी वृत्ति हो कैसी भी वाण हो कैसी भी दृष्टि हो - लेकिन होली हंस सबको होली बना देते हैं। सदा यह पॉवर रहे और सदा यह तीव्रगति के परिवर्तन की विधि आ जाये तो क्या बन जायेंगे? फरिश्ता । फरिश्ता किसी के प्रभाव में नहीं आता। अपना कार्य किया और वो चला। फरिश्ता कभी किसी विध्न के वश में नहीं होता - न विध्न के न व्यक्ति के। तो होली हंस अर्थात् फरिश्ता। सेवा की और न्यारा।

31/12/92

समस्या का कार्य है आना और महावीर का काम है समस्या का समाधान करना न कि हार खानां जो बाप के दिलतख्त नशीन हैं उसके आगे कोई समस्या, कोई विध्न नहीं आ सकते। न प्रकृति वार कर सकती, न माया वार कर सकतीं । दिल तख्त नशीन बनना अर्थात् सहज प्रकृति जीत माया जीत बनना। प्रकृति की हलचल ब्राहम्ण आत्माओं को हिला देती है। तो हलचल नहीं होनी चाहिए न।

18/11/93

सदा आत्मा में स्वमान स्मृति में रखो कि हम मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। इस स्वमान की सीट पर सदा स्थित रहो। जैसे सीट होती है वैसे लक्षण आते हैं कोई भी परिस्थिति सामने आये तो सैकेण्ड में अपने इस सीट पर सेट हो जाओ। सीट पर सेट नहीं होते हो तो शक्तियां भी आर्डर नहीं मानतीं। सीट वाले का आर्डर माना जाता है। सीट पर बैठने वाले कभी अपसेट नहीं हो सकते। या तो सीट है या अपसेट। कोई भी परिस्थिति आए किनारा नहीं करना है। सहन करना है। लेकिन फिर सहन करते-2 सामना करने की शक्ति में आ जाते हो। ऐसे ही निर्णय करने की आवश्यकता है लेकिन निर्णय शक्ति यथार्थ समय पर निर्णय नहीं ले तो उसको क्या कहेंगे? मास्टर शक्तिमान या कमजोर? तो ऐसे ट्रायल करो कि जिए समय जो शक्ति आवश्यक है उस समय वो शक्ति कार्य में आती है? एक सैकेण्ड का भी फर्क पड़ा तो जीत के बजाए हार हो जाती है। सैकेण्ड की बात है ना। निर्णय करना है या नहीं और हां की बजाए ना कर दिया तो सैकण्ड का नुकसान सदा के लिए हार खिलाने के निमित्त बन जाता है। इसलिए मास्टर शक्तिमान का अर्थ ही है जो हर शक्ति आर्डर में हो।

25/11/93

प्रयोगी आत्मा की पहली निशानी है - संस्कार के उपर सदा प्रयोग में विजयी। दूसरी निशानी - प्रकृति द्वारा आने वाली परिस्थितियों पर योग के प्रयोग द्वारा विजयी। समय प्रति समय प्रकृति की हलचल भी योगी आत्मा को अपने तरफ आकर्षित करती है। ऐसे समय पर योग की विधि प्रयोग में आती है। कभी योगी पुरुष को वा पुरुषोत्तम आत्मा को प्रकृति प्रभावित नहीं करती। प्रकृति पुरुषोत्तम आतमाओं की दासी है। मालिक दासी के प्रभाव में आ जाये तो इसको क्या कहेंगे। आजकल पुरुषोत्तम आत्माओं को प्रकृति साधनों और सैलवेशन के रुप में प्रभावित करती है साधन या सैलवेशन कम तो योगी युक्त भी कम। इसको कहा जाता है प्रभावित होना। योगी या प्रयोगी आत्मा की साधन के आगे साधन स्वतः का आधार नहीं हो लेकिन साधना साधनों को स्वतः ही आधार बनायेगी। इसको कहा जाता है- प्रयोगी आत्मा- तो चेक करो - संस्कार परिवर्तन विजयी और प्रकृति के प्रभाव के विजयी कहां तक बने हैं? तीसरी निशानी है विचारों पर विजयी। ये पांच विकार जो दूसरों के लिए जहरीलें सांप हैं लेकिन आप योगी प्रयोगी आत्माओं के लिए सांप गले की माला बन जाते हैं। स्वस्थिति के आगे परस्थिति कुछ भी नहीं। कितनी भी पहाड हो लेकिन आप उँचे हो तो पहाड छोटा लगेगा। तो जब कोई परस्थिति आये तो उड़ती कल में चले जाओ।

23/12/93(मुलाकात)

चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों, समस्यायें हो लेकिन समस्या के अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार करें जैसे खेल-2 में पार कर रहे हैं। खेल में सदा खुशी रहती है। चाहे कैसा भी खेल हो, लेकिन खेल है तो कैसा भी पार्ट बजाते हुए अंदर खुशी रहती है। चाहे कैसा भी पार्ट हो रोने का भी पार्ट हो लेकिन अंदर हो कि खेल है तो ऐसे ही जो भी बातें सामने आती हैं- ये बेहद का खेल है, जिसको कहते हो ड्रामा। और ड्रामा के तुम हीरो एक्टर हो। साधारण एक्टर नहीं हो। तो हीरो एक्टर अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाला। तब तो उसको हीरो कह जाता है। कैसी भी समस्या हो लेकिन खेल समझने से कडी समस्या भी हलकी बन जाती है।

18/1/94

सभी फरिश्ते स्थिति का अभ्यास करते हो? अभी देखो कोई भी प्रकृति की आपदा या परिस्थिति की आपदा आती है तो अचानक आती है ना, और दिन प्रतिदिन अचानक यह प्रकृति अपनी हलचल बढ़ाती जाती है। यह कम नहीं होनी है, बढ़नी ही है। अचानक आपदा आती है। तो

ऐसे समय पर समाने या समेटने की शक्ति की आवश्यकता है। और कहां भी बुद्धि न जाए, बस बाप और मैं बुद्धि को जहां लगाने चाहें वहां लग जाये। क्यों कया में न जायें, ये क्या हुआ, ये कैसे होगा, होना तो नहीं चाहिए कैसे हो गया- इसको ब्रेक कहेंगे? तो उड़ती कला के लिए ब्रेक बहुत पॉवरफुल चाहिए। पहाड़ी पर चढ़ते हैं तो बार-2 ब्रेक चैक रकते हैं तो उँची स्थिति में जा रहे हो तो बार-2 ब्रेक चैक करो। कोई भी संस्कार नेगेटिव से पॉजिटिव में परिवर्तन करना है समय एक सैकण्ड का है ओर आप पांच सैकण्ड में करो तो क्या होगा? तो अटेंशन इस परिवर्तन शक्ति का चाहिए। पहले स्वयं को परिवर्तन करो तब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो।

3/4/94

परिस्थिति कितनी भी बदलें लेकिन संतुष्टता की स्थिति को परिस्थिति नहीं बदल सकती। परस्थिति है ही बदलने वाली। आपके आगे कैसी भी हिलाने वाली परिस्थिति आये तो परिस्थिति ऐसे लगती है जैसे पपेट शो चल रहा है। तो कोई भी परिस्थिति आए तो यही समझो एक बेहद के, स्क्रीन पर कार्टून शो चल रहा है व पपेट शो चल रहा है। तो वह देखकर परेशान नहीं होंगे। माया का वा प्रकृति का यह भी एक शो है।

26/11/94

चेक करो कि परिवर्तन शक्ति समय पर काम आती है या समय बीत जाने पर सोचते ही रहते हो? जिसमें परिवर्तन शक्ति है तो सबका प्यारा बनता है। विचारों में भी सहज रहेगा। सेवा में भी विध्न रुप क्या होता है? मेरा विचार, मेरा पलेन, मेरी सेवा इतनी अच्छी होते हुए भी मेरा क्यों नहीं माना गया? तो उसको रीयल गोल्ड कहेंगे? मेरा पन आ गया, मेरापन आना अर्थात् अलरस मिक्स होना। जब रीयल गोल्ड में अलॉय मिक्स हो जाता है तो रीयल रहता है? उसका मूल्य रहता है? कितना फर्क पड जाता है। तो समय और वायुमण्डल को परखकर अपने को परिवर्तन करना इसकी आवश्यकता है। मोटी-2 बातों मे परिवर्तन करना तो सहज है लेकिन हर परिस्थिति में, हर संबंध सम्पर्क में समय और वायुमण्डल को समझ स्वयं को परिवर्तन करना यही नंबरवन बनना है। अगर अपने आप को परिवर्तन कर लिया तो ये परिवर्तन ही विजय बनने की निशानी है।

23/12/94

बापदादा देखते हैं कि परिस्थिति के समय कई आत्माओं को ब्राहम्ण परिवार के बजाय लौकिक संबंध जल्दी स्मृति में आता है। परिस्थिति किनारे के बजाय सहारा अनुभव कराती है। जब मरजीवा बन गए तो संबंध, जन्म बदल गया ना। तो फरिश्ता अर्थात पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं।

26/2/95

बाप दादा कहते हैं सदा वाह-2 याद रखो और कहते हैं व्हाई-2 अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आता है तो उमंग उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है। कोई भी परिस्थिति छोटी भी जब बडी लगती है तो व्हाई शब्द आता है- ये क्यों, ये क्या और फलाय कर लो तो परिस्थिति क्या होगी? छोटा सा खिलौना। तो जब भी व्हाई शब्द मन में आते तो कहो ब्राहम्ण डिक्शनरी में व्हाई शब्द नहीं है, फलाय है क्योंकि व्हाई-2 हाय-2 करा देता है।

कोई भी बडे ते बडी नाजुक परिस्थिति वास्तव में आगे के लिए बहुत बडा पाठ पढाती है, परिस्थिति नहीं लेकिन वह आपकी टीचर है उस नजर से देखो कि इस परिस्थिति ने क्या पाठ पढाया। इसको कहा जाता है नैगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करना । सिर्फ परिस्थिति को देखते हो तो धबरा जाते हो और परिस्थिति माया द्वारा नए-2 रुप में आयेगी। जिस रुप में आ चुकी है, उस रुप में नहीं आएगी। नये रुप में आएगी। इसलिए माया को देखने के लिए जानने के लिए त्रिकाल दर्शी और त्रिनेत्री बनो।

7/3/95

बाप दादा बहुत सहज शब्दों में युक्ति बता रहे हैं कि जब भी कोई परिस्थिति या प्रकृति हलचल के रुप में आए तो दो शब्द याद रखो, विधि नॉट करो या डॉट लगाओ। नॉट या डॉट । अगर कोई बात रॉग है तो यही सोचा नॉट माना नहीं करना है। न सोचना है, न करना है, न बोलना है। और डॉट लगा दो तो नॉट हो जाएगा। सोचो नॉट लगाओ डॉट । फिनिश। डॉट (बिंदी) लगाने में किना टाइम लगता है? सैकेण्ड से भी कम। लेकिन होता क्या है? समझते हो कि यह नहीं करना है, ठीक नहीं है लेकिन डॉट लगाना नहीं आता है। नॉलजफुल तो बन गए लेकिन सिर्फ नॉलजफुल नहीं चाहिए नॉलज के साथ-2 पॉवर फुल भी चाहिए, तो पॉवर फुल स्थिति कमजो है इसीलिए डॉट नहीं लगा सकते। और जिसे डॉट लगाना आएगा वह बाप को भी नहीं भूलेगा, बाप भी डॉट है (बिंदी) आप भी डॉट हो। फुलस्टॉप। फुलस्टॉप की मात्रा इजी है ना। उपर उड जाओ। व्हाई नहीं फलाय।

23/11/06

ज्ञान की पाइंटस जो डायरियों में अथवा बुद्धि में रहती है उन्हें हर रोज रिवाइज करो और अनुभव में लाओ तो किसी भी समस्या का समाधान सहज ही कर सकेंगे। कभी भी व्यर्थ संकल्पों के हैमर से समस्या के पत्थर को तोड़ने मे समय नहीं गवांओ। ड्रामा शब्द की स्मृति से हाई जम्प दे आगे बढ़ो फिर ये पुराने संस्कार आपके दास बन जाऐंगे। लेकिन पहले बादशाह बनो, तख्तनशीन बनो।

24/11/06

कोई कैसी भी बात सामने आये सिर्फ बाप पर छोड दो। जिगर से कहो - बाबा । तो बात खत्म हो जाऐगी । यह बाबा शब्द दिल से कहना ही जादू है। माया पहले-2 बाप को ही भुलाती है। इसलिए सिर्फ एक बात पर अटेंशन दो तो कमल पुष्प के समान अपने को अनुभव करेंगे। याद के आधार पर माया की समस्याओं के कीचड से परे रहेंगे कभी किसी भी बाप में हलचल में नहीं आयेंगे। सदा एक ही मूड होगी हलचल।................ ओम शांति।

साकार वाणियां

8/10/06

जो शक्तिशाली आत्माएं हैं वह समस्याओं को ऐसे पार कर लेती हैं जैसे कोई सीधा रास्ता सहज ही पार कर लेते हैं। समस्यायें उनके लिए चढती कला का साधन बन जाी हैं। हर समस्या जानी पहचानी लगती है। वे कभी भी आश्चर्यचकित नहीं होते, बल्कि संतुष्ट रहते हैं। मुख से कभी कारण शब्द नहीं निकलता, लेकिन उसी समय कारण को निवारण में बदल देते हैं। स्वस्थिति में रहकर सर्वपरिस्थितियों को पार करना ही श्रेष्ठता है।

10/10/06

विनाश के समय पेपर में पास होने वाले वा सर्वपरिस्थितियों का सामना करने के लिए आकारी लाइट रुपधारी बनो। जब चलते-फिरते लाइट हाउस हो जाएंगे तो आपका यह रुप (शरीर) दिखाई नहीं देगा। जैसे पार्ट बजाने समय चोला धारण करते हैं, कार्य खत्म हुआ, चोला उतारा।

31/10/06(अव्यक्त वाणी)

चेक करो हर समय कोई न कोई खजाना सफल कर रहे हैं। इसमें डबल फायदा है। खजाने को सफल करने से आत्माओं का कल्याण भी होगा और साथ में आप सब भी महादानी बनने के कारण, विध्न विनाशक, समस्या स्वरुप नहीं, समाधान स्वरुप बन जायेंगे। विध्न मुक्त, समस्या मुक्त बन

जाएंगे। जो समस्या के पीछे समय देते हैं वे कभी उदास उल्हास में आते अब अखण्ड महादानी, अखण्ड सहयोगी बनो।

1/12/06

दिन प्रतिदिन परिस्थितियां तमो प्रधान बननी हैं वायुमण्डल और भी बिगड़ने वाला है ऐसे वायुमण्डल में कमलपुष्प समान प्यारे रहने, अपनी स्थिति को सतोप्रधान बनाना इसके लिए इतनी हिम्मत वा शक्ति की आवश्यकता है जब यह स्मृति में रहे कि मैं मास्टर सर्वशक्ति मान हूं तो किसी भी परीक्षा में एक रस अचल अडोल रहेंगे।

.... ओम शांति।

8888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888888

ज्ञान सुमन भाग **3**

पेज न **13**

कितनी भी वडी पहाड जैसी भी वात हो किसी ने थप्पड मारा हुवा हो कुछ भी किया हुवा हो वावा कहेगा ठीक है वच्चे कोई वात नही करके पुचकार करेगा तो लगेगा कुछ हुवा ही नही। कहते भी है "थप्पड मारा भक्त को दर्द हुवा भगवान को"।

ज्ञान सरीता **1997 । 98** पेज न **157**

दादी जानकी

क्यों क्या के प्रश्नो मे जाना ही योगी जीवन में सवसे वडा विघ्न है।

पेज न **157**

कोई भी परीक्षा आये टेग्ट आये शान्त ग्हना तो किसी भी प्रश्न का जवाव आ जायेगा।

कभी कभी न चाहते हुए भी कहाँ न कहाँ से विघ्न आ जाते है गृहचारी वैट जाती है। परन्तु वावा कहते लगन वाले को विघ्न आ नही सकता। हमारी लगन को वढाने के लिए विघ्न आया है। तो कोई भी विघ्न से घवराने की वात नही है। विघ्न रूप नही बनना है डरना नही है घवराना नही है मूंझना नही है। वावा वैठा है रास्ता क्लिअर हो जायेगा। इसलिए "एक वल एक भरोसा" तो विघ्न नही आ सकता आता भी है तो एक वल एक भरोसे से विघ्न चला जाता है।

एक वात को प्यार से समझ करके उसे मन से स्विकार करने का भी गुण आवश्यक है । किसकी वावा को किटसिाईज या कट करना किसको गीराना यह है अपने ल्पिए आपेही विघ्न पैदा करते है ऐसे कर्मोसे अपने आपको समझ करके फी रखना विकर्मा जीत वनना।

डादी जानकी ज्ञान सरीता **1993**पेज क **141**

विघ्नो का वैठकर चिन्तन नही करो पार करने के लिए योगयुक्त होकर रहो । मर्यादा पर न चलेन के कारण विघ्न आता है। तो कान पकडने के लिए आता है। योग नही लगयेंगे । अमृतवेला योग नही करेंगे क्लास में मुरली ध्यान से नही सुनेंगे परचिंतन में टाइम गवायेंगे तो विघ्न आयेंगे ही।

स्वचिंतन में रहकर वावा को याद करेंगे विघ्न तो नही आयेंगे। विघ्न शांती अन्तरमुखता योगवल से हाट जाते है। विघ्नों से सेफ रहने के लिए योगयुक्त रहो दुसरा अच्छे संग में रहो।

दादी प्रकाशमणी

ज्ञान सरीता **1999** पेज न **19**

ऐसा कभी नही सोचना है कि "मेरा कोई सहारा नही है"। लेकिन विघ्नों से घवराओ नही। विघ्न भल कितना भी वडा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी वडा नही करो।

जिदद का स्वभाव ही ज्ञान में वहुत विघ्न डालता है। जिद् वाले अपन भी और दुसरों का भी नुकसान करते है। जहॉ जी हॉ का स्वभाव है वहॉ सव फुल वरसाते दुआये देते जहॉ जिद् है वहा पानी के मटके भी सुख जाते है।

क्लास दि **10 । 4 । 90** पेज न **23**

सवसे पहाला विघ्न होता है स्वस्थिती नीचे उपर होने से अगर स्व की स्थिती महान है तो कोई विघ्न आ नही सकता। वावा ने हमें नाम दिया है "विघ्न निाशक" इसलिए हामें हमें विघ्नो से पार रहना है। हमारा इस पढाई में सम्पन्न वनना भ्अी एक इम्तहान है।

जहॉ मनमत होता है वहॉ विघ्न आता जहॉ श्रीमत है वहॉ विघ्न आता ही नही।

दादी हृदयमोहिनी ः

पेज न **59** दि **14 । 9 । 99**

हम अपने आपसे पुछे अगर कोई भी प्रकार की परिस्थिती आती है तो उसमें खुशी गुम तो नही होती है। परिस्थितीयॉ तो आयेगी ही।

व्रम्मा वावा के सामने भी पेपर आये और फर्स्ट नम्वर में पास हो गये। यह हमारे सामने प्रक्टिकल पुफ है। पेपर हमको और ही पक्का वनाता है इसलिए इससे कभी घवराना नही है। इसलिए परिस्थिती या कोई वात में अपने को मुंझाना नही है क्योंकि वावा ने हमको ज्ञान और योग के पंख लगाकर के उडती कला की वाजी सिखाई है। तो जिन्हे उडना आता है वह हिमालय जितना वडी परिस्थिती को भी सहज पार करेंगे।

पेज न **116**

समस्यायें या संस्कार ः यह दो प्रकार की आती है लेकिन वाते वा समस्यायें हमारी स्वस्थिती के आगे यह परिस्थिती कुछ भी नही है। कहा ही जाता है पर स्थिती याने दुसरे के तरफ से आयी हुयी स्थिती स्व नही है ।

पेज न **131**

हमें सम्स्या स्वरूप नही समाधान स्वरूप वनना है। कारण नही सुनना है लेकिन निवारण स्वरूप वनना है। अगर हम लक्ष्य रखेंगे कि मुझे समाधान स्वरूप वनना ही है तो समस्या को समाधान करने में लग जायेंगे। नही तो समस्या ही वुद्रि में चलती रहेगी।

अन्त के समय आपके पास चार प्रकार के पेपर आने है **1** माया द्वारा **2** प्रकृति द्वारा **3** लगाव द्वारा **4** अशुद्ध आत्मायें भी अंत में वार कर सकती है लेकिन अगर हम योगयुक्त है तो कोई भी पेपर में हम सहज पास हो सकेंगे। इसलिए वावा मन्सा सेवा का अव्यास करा रहा है क्योंकि अम्त समय में ाकाले मृत्यु के कारण सभी के तमोगुणी संस्कार इमर्ज होंगे। उस समय खिंचातान होगी इसलिए अव्यास अव से चाहिए।

अन्त समय में प्रकृति की हलचल भी वहुत वढेगी पांचो तत्व सव इकटठे काम करेंगे आप सोचो उस समय क्या हालात होगी। इसके लिए एक तो हम मन को वीजी रखने के अव्यासी वने। मन को जव चाहो जैसे चाहो जिस रफ्तार से चलाना चाहो वहा मेरा मन जा सके इसको कहते है मन को कन्ट्रोल करने की पावर। यही अव्यास अन्त में काम आयेगा।

अन्त के समय यह सभी वाते होगी। हमारे ही जो विकार कमजोरियॉ है वह जिन्न के रूप में हमारे सामने आयेंगे। जिसकी जैसी गलती होगी उसको वैसी सजा मिलेगी। जिस समय भय होता है उस समय हाय हाय करते हुए कहेंगे इतनी गलतीयॉ मैने की है वही भुत है। भय का भुत सवसे वडा है।

इसलिए अगर अन्तिम समय की तैयारी करनी है तो शॉर्ट में मै तो यही कहुंगी कि अपने मन को शुद्ध तरफ वीजी रखने की दिनचर्या टाईमटेवल हरेक अपना वनाये और उस पर पूरा चले। अव मन्सा सेवा का वहुत अव्यास चाहीए। पांच मिनीट भी मिले तो यह अव्यास करो। ऐसे नही समझो एक घंटा मिले तव अव्यास करू फिर सकाश देने की सेवा में लग जाना चाहिए।

वावा कहते है कारण को निवारण करने वाले वनो। कारण वताकर के हम अपने आपको स्वयं ही ढलिा करते है। अव कारण को निवारण करने वाले वन जाओ समस्या को समाधान करने वाले वन जाओ तो समस्या कहाँ जायेगी समस्या निचे रह जायेगी और समाधान करने वाली मै वनुंगी तो मै उंची हो जाउंगी।

कितनी वडी समस्या हो हिमालय जितनी भी लेकिन आप परमधाम जितनी उंची पहाडी पर जाके वावा के साथ वैठ जाओ। तो कोई भी वडी समस्या क्या लगेगी चींटी नीचे से देखेंगे तो वहुत वडी वात लगेगी लेकिन परमधाम में वावा के साथ वैठकर देखो तो कुछ भी नही लगेगी।

जगदिश भाई ः ज्ञान सरीता **2000** पेज नं **150** दि **27 | 6 | 2000**

परीक्षायें व परिस्थितीयाँ जीवन में आगे वढाने के लिए आती है निश्‍चय वाला सदा निश्‍चिंत रहता है। आप अपनी अचल अदोल अवस्था में रहो। यह हमने जीवन में अनुभव किया है। कैसी भी परिस्थितीयाँ आयी जिससे लगा कि झकजोर हो रही है हिलोरा आ रहा है लेकिन वावाने हमेशा पार किया।

आध्यात्मिक एवं नैतिक मुल्य भाग **1**

पेज **185**

विघ्न तो अपने ही विकर्मो का फल समझना चाहिए। उसको प्रसन्नता पुर्वक सहन करना चाहिए। इससे क्लेश टल सा जाता है। इससे शारिरीक व्याधि अथवा अन्य विघ्न हल्के से हो जाते है। अव जो विघ्न आया वह आया ही इसलिए है कि आध्यात्मिक अवस्था में प्रगति होनी है क्योंकि कलियुग के अन्त में ज्ञान प्राप्त करने वाले की चढती कला है। अव जो हो चुका उसकी चिन्ता न करके आगे उन्नती के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

पेज **191**

कोई भी विघ्न परिक्षा समस्या वा विकट परिस्थिती सामने आये और उसमें स्वस्थिती में कुछ हलचल पैदा हो तो अपने से जो वडे निमित्त है अर्थात जो योग और धारणा में आगे है उनसे सहयोग लेकर चलते चलना अर्थात शिववावा का हाथ साथ और दैवी परिवार का संग तथा स्नेह तथा ज्ञान के श्रवण मनन को छोडने का कभी भी संकल्प न करना वल्कि अंगद के समान अथवा महावीर की न्यायी अपने कदम हिलने नही देना।

आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्य भाग **2**

पेज **79**

यदि किसी समस्या के वारे में हम पहले से ही जानते है कि वह हमारे सामने आयेगी तो उसके लिए हम पहले से ही तैयार रहते है और उसके आ जाने पर हम ज्यादा घवराते नही है। अतः एक वात तो हमे याद रखनी चाहिए कि ये विघ्न आयेंगे। दूसरी यह याद रखना चाहिए कि ये हमारी ईश्‍वरीय विद्या अथवा योग विद्या के अर्जन में पाक्टिकल परिक्षाये मान कर उन्हे तत्परता से पार करना चाहिए और इन्हे मार्ग की यथार्थता के चिन्ह समझना चाहिए जैसे कि सडक पर जाता हुआ कोई फासला इंगीत करने वाले पत्थर को देखकर समझता है कि आगे वढ रहा हू। तिसरी वात यह है कि सदा इसी निश्‍चय में स्थित रहना चाहिए कि सर्व समर्थ परमपीता परमात्मा की मार्ग प्रदर्शन मुझे प्राप्त होने से मै इन्हे अवश्य पार कर ही लुंगा।

परमपिता परमात्मा शिव कहते है कि ऐसे परिस्थिती को आत्मिक स्थिती से पार करो। परिस्थितीयों से प्रभावित होना कमजोरी है आप अपनी स्थिती को वनाये रखोगे तो आपके आत्मिक वल से परिस्थितीयाँ भी ठीक हो जायेगी।

परमार्थ में लगने से व्यवहार तथा गृहस्थ भी सुधरेगा। कार्य करते हुए भी अपने धर्म को नही छोडना चाहिए। यदि हम ऐसा नही करेंगे तो परिस्थितीयाँ हमारे लिए क्लेश तथा दुःख का कारण वन जायेगी। उन परिस्थितीयों का सामना करने के लिए हमे मनोवल सहनशक्ति पवित्रता का वल तथा आत्मिक शक्ति और ईश्‍वरीय शक्ति नही मिल सकेगी। तुफानों को तोहफा माने और उनमें अपनी सहन शक्ति के विकास के अवसर को समझे तो कल्याण प्रत होगा।

जो परिस्थितीयाँ हमारे सामने आती है वे हमारे अपने ही पुर्वकर्मो का ही तो फल है। उनके लिए तो हम अन्य किसीको दोषी ठहरा नही सकते।

ईश्वरीय ज्ञान हमे ऐसी परिस्थितीयों में ही एकरस रहने का मार्ग दर्शाता है। अतःइन परिस्थितीयों में ज्ञान के वलप्रध रहास्यों को धारण करना चाहिए और इसके लिए अधिक ज्ञान वालों का संग करना चाहिए।

ज्ञाननीधी पेज न **7**

ये परिक्षायें केवल हमारी परिपक्वता को मापने काही साधन नही होती वल्की हमारे जीवन को मोड देने वाली हमे अनुभवी और मजवुत वनानेवाली और हमारे कई अवांछित इपरंतु पक्के संस्कारों को तोड तोड कर हमारा रास्ता साफ करने वाली भी होती है। संसार में जितनी भी समस्यायें हैउनका मुल कारण प्रेम का अवाव है अथवा इनके मुल में प्रेम की विकृति ही है।

ज्ञानसुधा पेज न **133**

वावा यह भी कहते है कि हाहाकार के समय मन विचलीत होगा इंन्द्रिया भी चंचल होगी। वह आखरी परिक्षा होगी। छीपे हुए दवे हुए पुराने संस्कार उछलेंगे। आपको पता नही रहेगा और आप आश्चर्य खायेंगे कि यह मेरे अन्दर है। अगर पहले से उन पुराने संस्कार को जड से समाप्त नही किया होगा तो अन्तिम समय वाहर निकलेंगे। जिनकी दृष्टि वृत्ति खराव है और भटक रही है उन अशुद्व आत्माओं का क्या हाल होगा वे भी दूसरों के अन्दर प्रवेश कर अपने विकारों को प्रकट करेंगी अपनी मनमानी करेंगी। वावा ने कहा है उस समय पांच विकार और पांच तत्व दोनो अपनी चरम सीमा पर रहेंगे।

उस समय अपनी स्थिती ऐसी होनी चाहिए कि आपको देखकर अशुद्व आत्माओं को आपका शरीर दिखायी न पडे वदले में आपमें प्रकाश ही प्रकाश, नूर ही नूर दिखाई पडे, आपकी फरिश्तापन की अवस्था दिखाई पडे। अगर ऐसा अनुभव उनको नहीं होगा तो आप खुद भटक जायेंगे।

वावा कहते है अभी से अभ्यास करो एकनामी और एकॉनामी वनने का क्योंकी आगे जाकर खाने-पीने पहनने के लिए कुछ नहीं मिलने वाला हैं। अभी से एकॉनामी वनकर रहने का अभ्यास करो। वीच-वीच में कुछ नहीं मिलता तो भी संकल्प नहीं चलाओ। उतना ही नहीं अगर दिन में आप तीन वार, चार वार खाते हो तो एक वार, दो वार खाने का अभ्यास करो, कभी-कभी कुछ नहीं खाने का अभ्यास करो। झव अन्त में कुछ नहीं मिलने वाला होगा उस समय काम आयेगा, भूक-प्यास सहन करने की हिम्मत आयेगी।

अशरीरीपन का अभ्यास, देह से न्यारा होने का जे अनुभव है उसको   वार-वार करते रहना चाहिए और उसका अभ्यास दिन प्रतिदिन वढ़ाते रहना चाहिए।

तन की परीक्षा होगी, उसी प्रकार मन की भी परीक्षा होगी। मन चंचल होगा। मन की जो इन्द्रियॉं है वे भी चंचल होंगी, उनसे भी परीक्षा होगी। मन में ऐसे संकल्प आयेंगे, उछलेंगे जो सोचा नहीं होगा क्योंकि वे मन में दवे हुए रहते हैं, आपने उनको अंश सहित समाप्त नहीं किया होगा।

वावा कहते इन सव परीक्षाओं में पास होने के लिए लगावमुक्त, कोधमुक्त नष्टोमोहा होना पडेगा।

ज्ञानामृत-डिसें. 2005 डॉ. गिरीश पटेल

गहराई से विचार करें तो पता चलेगा कि परिस्थिति तनावपूर्ण नहीं होती है, मनःस्थिति तनावपूर्ण है जिसमें परिवर्तन की आवश्यकता है।

परिस्थिति चाहे कैसी भी हो वह तनाव निर्मित नहीं करती उसके प्रति हमारा दृष्टिकोन तनाव निर्मित करता है। परिस्थितियों का कोई जिवन नहीं होता हमारे गलत कायों से हम उन्हें जीवन देते हैं।

सारे दिन में कार्य व्यवहार में जो भी परिस्थितियॉं आती है उसको सुने। सुनेंगे तो वहुत अच्छा संदेश मिलेगा। अगर अन्तर्मुखी होकर असली कारम जान लेंगे तो फिर सामना कर पायेंगे।

किसी भी परिस्थिति के **3** या **4** पहलू होते हैं। जव हम किसी परिस्थिति से डर जाते हैं तो उसके एक या दो पहलुओं को ही सुलझा पाते है। जिन्हे सुलझा नहीं पाते वे समस्या वनते हैं। जव हम परिस्थिति को चुनौती के रूप में लेते है तो उसके चारों ही पहलुओं को सुलझा लेते हैं और हमारी क्षमता वहुत ही वढ़ जाती हैं। जवहम चुनौती के रूप में किसी परिस्थिति को लेते हैं तो असंभव भी सं हो जाता हैं।

कुछ ऊँचे विचार मन ही मन दोहराने से आपमें परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति आ जाएगी। तीन-तीन शब्दों को याद रखो।

1। Face it (सामना करो), Fight it (लडो), Finish it (समाप्त करो).

2। Greet it (परिस्थिति का स्वागत करो), Meet it(चुनौतियों से मिलो), Beat it(और उन्हें मारो).

कितनी भी भयानक परिस्थिति हो पर तुरन्त पूछो कि मेरे नियंत्रण में क्या है, जो मेरे नियंत्रण है वही मुझे सोचना है, वैसा ही जीवन बीताना है, कोई न कोई चीज हमारे नियंत्रण में जरूर होती है।

अपनी समस्या दूसरे को वता दे आप हल्के हो जायेंगे । ज्यादा विकराल परिस्थिति में भल रो लें, वह भी अच्छा है क्योंकि जे तनाव से संवंधीत हारमोन है वे शरीर से वाहर आ जाए तो अच्छा है लेकिन वार-वार नहीं रोना चाहिए, नही तो शक्ति कम हो जाती है। परन्तु जव असत्य समस्या हो तो रोना भी अच्छा है। परिस्थिति जैसी है उसे वैसी ही देखे।

<u>मिडिया-एप्रिल 2005</u>

मन शक्तिशाली वनाईये, मुश्किलों को भगाईयें। आज मनुष्य के मन की कमजोरी से मुश्किले हावी हो जाती है। छोटी राई जैसी मुसीवत को पहाड जैसा स्वरूप दे देते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। ज्यादा सोचने से समस्या और ही विराट रूप धारण करती है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि समस्या चली जाती है लेकिन विचार मन में वना रहता है। और धीरे-धीरे वह विचार आदत का रूप ले लेता है।

अगर हम समस्या से मुक्त होना चाहते हैं तो समस्या के वारे में ज्यादा नहीं सोचना चाहिए। ज्यादा सोचने से भविष्य वदल नहीं सकते। होगा वही जो जीवन खेल में निश्चत है।

हमें परिस्थिति वदले उनका इंतजार नहीं करना चाहिए लेकिन स्वयं को वदलने के लिए तत्पर रहना चाहिए। आध्यात्मिकता माना ही स्वयं में जागृति लाना। राजयोग से हमारा नकारात्मक दृष्टिकोन वदल जाता है। मनुष्य की सवसे वडी सम्पत्ति है मनुष्य का अपना स्वभाव और अपने कर्म।

<u>साकार वाणी</u>

<u>ता. 2/01/97</u>

अनेक प्रकार के मन्सा तूफान भी आयेंगे और नैचुरल कैलेमिटीज विमारियाँ आदि भी आयेगी क्योंकि अव पिछाडी का पाम्प है। माया खूव झोके लगायेगी। जो पक्के निश्चयवुद्धि है उन्हों को तो मालूम पडता है कि शरीर के हिसाव किताव भी चुक्तू होंगे।

तूफान से डरना नहीं है। ज्ञान मंथन से वुद्धि को भरपूर रखना है।

<u>ता. 6/01/97</u>

समय और परिस्थिति प्रमाण अपनी श्रेष्ठ स्थिति वनानेवाले अष्ट शक्ति सम्पन्न। कोई भी परिस्थिति उन्हें श्रेष्ठ स्थितिसे नीचे नहीं उतार सकती।

<u>ता. 7/01/97</u>

नथिंग न्यु की युक्ति द्वारा हर परिस्थिति में मौज की स्थिति का अनुभव करनेवाले अचल अडोल भव।

<u>ता. 10/01/97</u>

वाप कहते हैं माया के तुफान तो आयेंगे परन्तु तुम स्थेरीयम रहना। वाप कहते यह वॉक्सिंग है। घडी-घडी गिरते तो कमजोर वन जायेंगे।

<u>ता. 15/01/97</u>

यह सव ड्रामा में नूँध है। तूफान, नैचुरल कैलेमिटिज आनी ही है और सव खण्ड खत्म होंगे।

<u>ता. 16/01/97</u>

अव वाप कहते है-- मुझे याद करो। विनाश सामने खडा है, मुझे याद करेंगे तो स्वर्ग का मालिक वनेंगे।

अर्थक्वेक आदि होंगे, सभी डैम्स आदि फट पडेंगे। आफते तो वहुत आनेवाली है। जिनको ज्ञान होगा वह तो डांस करते रहेंगे।

ता. 17/01/97

परमात्म प्यार में वह शक्ति है जो कोई भी परिस्थिति उसे रोक नहीं सकती। परमात्म प्यार वुद्धिवानों की वुद्धि वन परिस्थिति को श्रेष्ठ स्थिति में वदल देता है। असम्भव कार्य भी संभव हो जाते है। वापदादा का वायदा है कि हर समस्या को पार करने में प्रीति निभाते रहेंगे।

अपने श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ चलन द्वारा दुआयें जमा कर लो तो पहाड़ जैसी वात भी रूई के समान अनुभव होगी।

ता. 19/01/97

वावा कहते हैं वर्सा लेलो, मनुष्य को मरने में देरी नहीं लगती है। आफतें आदि वहुत होती है। आप सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझ वाप को याद करो। भाप और में यह छत्रछाया है तो कोई भी विघ्न ठहर नहीं सकता।

ता. 25/01/97

हर परिस्थिति में सहनशिल वनो तो मौज का अनुभव करते रहेंगे।

ता. 29/01/97

अनेक प्रकार के तूफानों में रहते स्वयं को स्थेरीयम वनाना है। माया की चोट से वचने के लिए वहुत-वहुत खवरदार रहना है।

ता. 6/02/97

विघ्न ही आत्मा को वलवान वनाते है इसलिए विघ्नों से डरो मत।

ता. 7/02/97

माया कितने भी रंग दिखाये मैं मायापति हूँ इस स्मृति से माया का खेल देखो खेल में हार नहीं खाओ। साक्षी वनकर मनोरंजन समझकर देखते चलो तो उनके लिए माया की कोई समस्या समस्या नहीं लगेगी। कोई क्वेश्चन नहीं होगा।

ता. 11/02/97

वावा ने तो समझा दिया है कि ज्ञान यज्ञ में अनेक प्रकार के विघ्न तो पडेंगे। वहुत अत्याचार होंगे। कामेशु, कोधेशु हैं ना। विष न मिलने के कारण मारते है। कन्याओं को भी शादी के लिए वहुत मारते है। वावा तो कहते हैं जो श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठाचारी वनेंगे।

ता. 14/02/97

जो स्मृतिस्वरूप है, वह हर परिस्थिति में सदा अचल रहते है, परिस्थिति रूपी वड़े से वड़ा पहाड़ भी आ जाए, संस्कार टक्कर खाने के वादल भी आ जाए, प्रकृति भी पेपर ले लेकिन अंगद समान मन वुद्धि रूपी पांव को हिलने नहीं देते।

ता. 1/03/97

लास्ट समय में चारों ओर व्यक्तियों का प्रकृति का हलचल और आवाज होगा। चिल्लाने का, हिलाने का वायुमंडल होगा। ऐसे समय पर सेकण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ, यह अभ्यास ही विजयी वनायेगा।

ता. 8/03/97

वावा कहते है वच्चे गन्दे विकल्प वहुत आयेंगे परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई काम नहीं करना।

ता. 11/03/97

माया की फागी वडी जवरदस्त है, उससे खवरदार रहना है, फागी (वादल) में कभी भी मूँझना नही।

ता. 15/03/97

त्रिकालदर्शी स्थिति द्वारा मूंझने की परिस्थितियों को मौज में परिवर्तन करना।

ता. 18/03/97

स्व स्थिति को ऐसा शक्तिशाली वनाओ जो परिस्थितियां उसे नीचे ऊपर न कर सकें।

ता. 22/03/97

विघ्न विनाशक वही वनता है जो सर्व शक्तियों से सम्पन्न है।

ता. 30/03/97

विघ्न प्रूफ बनने के लिए दुआओं का खजाना जमा करो।

ता. 1/04/97

संगठन में रहते सदा निर्विघ्न और सन्तुष्ट रहने के लिए जितनी सेवा उतना ही न्यारापन हो। कितना भी कोई हिलाये, एक तरफ एक डिस्टर्ब करे, दूसरे तरफ दूसरा। कोई सैलवेशन नहीं मिले, कोई इन्सल्ट कर दे, लेकिन संकल्प में भी अचल रहो तब कहेंगे निर्विघ्न आत्मा।

देही अभिमानी स्थिति द्वारा तन-मन की हलचल को समाप्त करने वाले ही अचल-अडोल रहते हैं।

ता. 7/04/97

इतना मजबूत बनना है। पहले पहले आफते आयेंगी फैमन की। बाहर से अनाज आ नहीं सकेगा मारामारी हो जायेंगी उस समय निडर बनना पड़े।

ता. 9/04/97

बुद्धि रूपी हाथ बापदादा के हाथ में दे दो तो परिक्षाओं रूपी सागर में हिलेंगे नहीं।

ता. 23/04/97

सदा निर्विघ्न वही रह सकता है जो सी फादर फालो फादर करता है। सी सिस्टर सी ब्रदर करने से ही हलचल होती है। इसलिए अब बाप को फालो करते हुए बाप समान संस्कार बनाओ तो संस्कार मिलन की रास करते हुए सदा निर्विघ्न रहेंगे। शान्ति की शक्ति से अथवा शान्त रहने से कितना भी बड़ा विघ्न सहज समाप्त हो जाता है।

ता. 20/05/97

कैसी भी परिस्थिति अथवा समस्याओं के पहाड़ भी आ जायें तो भी उडनेवाले कभी रूकेंगे नहीं।

ता. 5/06/97

नॉलेज की शक्ति धारण कर लो तो विघ्न वार करने के बजाय हार खा लेंगे।

ता. 13/06/97

बीमारी आदि होती है तो अपने ही कर्म कहे जाते है। अनेक जन्मों के विकर्म किये हैं, इस कारण भोगना होती है। इसलिए कभी भी इससे डरना नही है। खुशी से पास करना है क्योंकि अपना ही किया हुआ हिसाब-किताब है।

ता. 18/06/97

अकालतख्त नशीन सो दिलतख्तनशीन बनो और इसी रूहानी नशे में रहो तो कोई भी विघ्न वा समस्या आपके सामने आ नहीं सकती। प्रकृती और माया भी वार नही कर सकती। तो तख्तनशीन बनन अर्थात सहज प्रकृतीजीत और मायाजीत बनन।

ता. 19/06/97

मम्मां ने कहा कि अभी सबके सामने दो पेपर आयेंगे - एक प्रकृती का पेपर और दूसरा अशुद्ध संस्कारों के फोर्म का पेपर। यह दोनों पेपर आयेंगे। लेकिन योग की शक्ति से, स्नेह की शक्ति से आप लोगों को इन पेपर्स में पास होना है। इसलिए अभी अपने योग की शक्ति को प्रयोग में लाओ तब आने वाले समय में आप सफलता पूर्वक उसका सामना कर सकेंगे।

ता. 10/07/97

पूरा निश्चय न होने से ही अवस्था डाबाडोल होती है। जैसे पारा है ना। अभी-अभी खुशी का पारा चढता है। अभी-अभी भूल जायेंगे।

ता. 19/07/97

यह सितम तो होंगे ही, सितम भी कर्मभोग है। पुरूष स्त्री को मारता है ऐसे ही कोई मार सकता है क्या? तुमने भी मारा होगा। वही हिसाब किताब चुक्तु हो रहा है।

ता. 23/02/04

हंस बनने में भी माया के बहुत विघ्न पडते हैं। कुछ न कुछ गिरावट आ जाती है। मुख्य गिरावट आती है देह-अभिमान की। इस संगम पर ही तुम बच्चों को चेंज होना है। जब तुम हंस बन जाते हो तो फिर हंस ही हंस हो।

ता. 19/06/04

परिस्थिति के पेपर के कारण को जान स्वयं को पास होने के श्रेष्ठ स्वरूप की महसूसता हो कि स्वस्थिति श्रेष्ठ है, परिस्थिति पेपर है यह महसूसता सहज परिवर्तन करा लेगी और सच्चे दिल से महसूस किया तो दिलाराम की आशिर्वाद प्राप्त होगी।

ता. 16/08/04

चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ हों, समस्याओं के अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार कर ले जैसे खेल-खेल में पार कर रहे हैं। चाहे बाहर से रोने का भी पार्ट हो लेकिन अन्दर हो कि यह सब खेल है-- जिसको कहते है ड्रामा और ड्रामा के हम हीरो पार्टधारी है। हीरो पार्टधारी अर्थात एक्युरेट पार्ट बजाने वाले। इसलिए कड़ी समस्या को भी खेल समझ हलका बना दो, कोई भी बोझ न हो।

ता. 18/08/04

कोई माया के तूफानों से हार खा लेते, यह सब देखते हुए भी बाप को चिंता नहीं होती क्योंकि बाप जानते हैं यह सतयुग की राजधानी स्थापन हो रही है। फिर भी बाप शिक्षा देते हैं-- बच्चे जितना हो सके याद में रहो। माया के तूफानों से डरो नहीं। तुम्हारी अवस्था ऐसी मजबूत होनी चाहिए जो कोई माया का तूफान हिला न सके। रावण कोई और चीज नहीं है वा कोई मनुष्य नहीं है। पॉच विकारों रूपी रावण को ही माया कहा जाता है।

ता. 18/07/06

लून पानी हो आपस में ही झगडते रहें। डिससर्विस करने वाले का पद भ्रष्ट हो जाता है। मनुष्य-मनुष्य में कितने लुन पानी हो रहते है। बात मत पूछो। तुम्हारा धन्दा है उनको बहुत मीठा बनाना। कोई ऐसे फिर लुन पानी बनने वाले मिल जाते है तो कहते है भावी। यह भी सहन करना है। हमको फिर भी प्यार से नमक को चेंज कर मीठा बनाना है।

ता. 19/07/06

जो सच्चे होते उनकी अवस्था पक्की रहती है। जरा भी विकार की तरफ ख्याल नहीं जाता है। ऐसे बच्चों पर अगर कोई जबरदस्ती जुलुम करते है तो उसका पाप नहीं चढ़ता है। पुकारती है बाबा हम तो आपके है। शरीर तो जैसे मुर्दा है। ऐसे निश्चयबुद्धि वाले जो है वह बडा ऊँच पद पा लेते है।

ता. 17/04/69

परिस्थितियों को देख परेशान हो जाते है। परिस्थितियों का आधार ले स्थिति को बनाते है। स्थिति से परिस्थिति को बदलते नही। समझते है कि जब परिस्थिति को बदलेंगे तब स्थिति होगी। लेकिन होनी चाहिए स्व-स्थिति की पावर जिससे ही परिस्थिति को बदलते नही।वो परिस्थिति है यह स्व-स्थिति है। परिस्थिति में आने से ही कमजोरी में आ जाते। स्व-स्थिति में आने से शक्ति आती है। तो परिस्थिति में आकर ठहर नही जाना है। स्व-स्थिति की इतनी शक्ति है जो कोई भी परिस्थिति पर वार कर सकती है। स्व-स्थिति की कमजोरी होने के कारण कहां-कहां परिस्थिति प्रबल हो जाती है।

ता. 18/05/69

कोई भी व्यक्ति सामने आये तो आप लोगों को तो एक सेकण्ड में उनके तीनों कालों को परख लेना चाहिए। एक तो पास्ट में उनकी लाइफ क्या थी और वर्तमान समय उनकी वृत्ति, दृष्टि और भविष्य में कहां तक यह अपनी प्रालब्ध बना सकते है। जानने की प्रैक्टिस चाहिए। वर्तमान समय जो आनेवाले है उसमें अगर यह गुण न होगा, कमी होगी तो धोखें में आ जावेंगे। कई रंग रूप से आर्टि-फिसियल रूप में भी परखने लिए आयेंगे, भीन्न-भीन्न रूप से। और अशुद्ध आत्माओं की भी बहुत संभाल करनी है। ऐसे-ऐसे केस भी बहुत होंगे दिन प्रतिदिन। पाप आत्मायें तो बहुत होते है। आपदाये, अकालेमृत्यु, पाप कर्म बढ़ते जाते है तो उन्हों की वासनायें जो रह जाती है वह फिर अशुद्ध आत्माओं के रूप में भटकती है। इसलिए यह भी बहुत बडी सम्भाल रखनी है। कोई में अशुद्ध आत्मा की प्रवेशता होती है तो उनको भगाने के लिए एक तो धूप जलाते है और आग में चीज को तपाकर लगाते है और लाल मिर्ची भी खिलाते है तो आप सभी को फिर योग की अग्नि से काम लेना है।हर कर्मेद्रियों को योगाग्नि में तपाना है तो फिर कोई वार नही कर सकेंगे। थोडा भी कहां ढीलापन हुआ, कोई भी कर्मेद्रियां ढीलि हुई तो फिर प्रवेशता हो सकती है। अशुद्ध आत्मायें भी बडी पावरफुल होती है। वह माया की भी पावर कम नही होती। यह बहुत ध्यान रखना है। और कई प्राकृतिक आपदायें भी अपना कर्तव्य करेगी। उसका सामना करने लिये अपने में ईश्वरीय शक्तिरूप की

आवश्यकता है। उस समय स्नेह नहीं रखना है। उस समय शक्तिरूप की आवश्यकता है। उस समय स्नेह नहीं रखना है। उस समय शक्तिरूप बनना यह भी सोचना है।

ता. 26/05/69

अब बहुत रूप से, आत्मा के रूप से, शरीर के रूप से आप सभी को बहकाने वाले बहुत रूप सामने आयेंगे लेकिन उसमें बहकनाा नही है। बहुत परिक्षायें आयेंगी लेकिन कुछ है नही। परिक्षाओं में पास कौन हो सकता है जिसको परख पूरी होगी। परखने की जितनी शक्ति होगी उतना ही परिक्षाओं में पास होंगे।

परिस्थितियां नही बदलेगी। यह नही सोचना की मुसीबतें हल्की होंगी फिर कमाई करेंगे। यह तो दिन-प्रतिदिन और विशाल रूप धारण करेंगी परन्तु इनमें रहते हुए भी अपनी स्थिति की परिपक्वता चाहिए। इसलिए ही समय का ध्यान और अपने स्वरूप की स्मृति और इसके बाद फिर स्थिति।

ता. 28/11/69

समस्यायें सामने क्यों आती है क्योंकि ज्ञान की कई बातें उल्टे रूप में अन्दर में धारण कर ली है।

ता. 20/12/69

महीन बुद्धि वाले कैसी भी परिस्थिति में अपने को मोल्ड कर सकेंगे। जैसी परिस्थिति उसमें अपने को मोल्ड कर सकेंगे।

ता. 25/12/69

जो हल्के होंगे वे एक सेकेण्ड में कोई भी आरमा के संस्कारों को परख सकेंगे। और जो भी परिस्थिति सामने आवेगी उनका एक सेकण्ड में निर्णय कर सकेंगे।

ता। 18/01/70

अब वह समय नजदिक आ रहा है जिसमें आप सभी का कल्प पहले वाला चित्र प्रत्यक्ष होना है। अनेक प्रकार की समस्याओं के लिए अंगुली देनी है। कलियुगी पहाड तो पार होना ही है। लेकिन इस वर्ष में मन की समस्यायें, तन की समस्यायें, वायुमण्डल की सम्स्यायें सर्व समस्याओं के पहाड को स्नेह और सहयोग की अंगुली देनी है। तन की समस्या भी आनी है। यह जो अलौकिक सम्बन्ध है उस सम्बन्ध द्वारा भी छोटी-छोटी समस्यायें आयेंगी। लेकिन यह समस्यायें सभी पेपर समझना, यह प्रैक्टिकल बातें न समझना, यह पेपर समझना। अगर पेपर समझकर उनको पास करेंगे तो पार हो जायेंगे।

सहज बातों को पार करना कोई कमाल नही है। मुश्किल बातों को पार करना वह है कामल। मुश्किलातों को मुश्किल न समझकर चलना यह है कमाल।

ता. 24/01/70

विघ्न तो आयेंगे उन्हों को खत्म करने की युक्ति है, सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है। कोई भी विघ्न आए तो उनको पेपर समझ पार करना है। बात को नही देखना है। लेकिन पेपर समझना है। पेपर में भी भिन्न-भिन्न क्वेश्चन होते है। कब मन्सा का, कब लोक लाज का, कब सम्बन्ध का, कब देश वासियों का क्वेश्चन आवेगा। परन्तु इसमें घबराना नही है। गहराई में जाना है। वातावरण ऐसा बनाना चाहिए जो न चाहते भी कोई खैंच आए।

कैसी भी परिस्थिति हो, क्या भी हो, वायुमण्डल कैसा भी हो, लेकिन कमजोर न बने इनको शूरवीर कहा जाता है। शारिरीक कमजोरी होती है तो भी असर हो जाता है-- मौसम वायुमण्डल आदि का। तन्दुरूस्त को असर नही होता है।

परिस्थितियां भी अब दिखला रही है कि पुरूषार्थ कैसा करना है। जब परीक्षायें शुरू हो गयी तो फिर पुरूषार्थ नही कर सकेंगे। फिर फाइनल पेपर शुरू होगा। आजकल की परिस्थितियां ही वैराग्य दिलाती है।

कई बातें ऐसी होती है जिनको खैंचने से खैंचा जाता है। कई बातों में ढीला छोडना भी खैंचना होता है। पतंग को ऊँचा उडाने के लए ढीला छोडना पडता है। देखा जाता है इस रिति नही खैंचेगा तो फिर ढीला छोडना चाहिए। तो फिर वह स्वयं खैंचेगा विघ्नों को मिटाने की युक्तियां भूल जाते है, तो पुरूषार्थ भी ढीला हो जाता है।

ता. 26/01/70

एक स्नेह से दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति से कोई भी परिस्थितियों का सहज ही सामना करेंगे।

स्थिति इतनी पावरफूल हो जो परिस्थितियां स्थिति से वदल जायें। परिस्थिति के आधार पर स्थिति न हो। स्थिति परिस्थिति को वदल सकती है क्योंकि सर्वशक्तिमान के संतान हो तो क्या ईश्वरिय शक्ति परिस्थिति को नही वदल सकती। रचयिता के वच्चे रचना के अधिन कैसे होंगे। अधिकार रखना है न कि अधीन होना है। जितना अधिकार रखेंगे उतना परिस्थितियां भी वदल जायेगी। अगर उनके पीछे पडते रहेंगे तो और ही सामना करेंगे। परिस्थितियों के पीछे पडना ऐसा है जैसे कोई अपने परछाई को पकडने से वह हाथ आती है? और ही आगे वढती है तो उसको छोड दो। वायुमण्डल को वदलना यह तो वहुत सहज है। इतनी छोटी सी अगरवत्ती, खुशवु की चीज भी वायुमण्डल को वदल सकती है। तो ज्ञान की शक्ति से वायूमण्डल को नही वदल सकते? वायुमण्डल को सदैव शुद्ध रखना है। अगर समय प्रमाण युक्ति न होती है तो समझना चाहिए योगवल नही है।

यह माया तो शेरनी रूप में सामना करने आती है उनको अपने अधीन कर सवारी वनाना अर्थात उनके शक्ति को खत्म करना। ऐसी शक्तियां जिनकी शेरपर सवारी दिखाते है वही तुम होना।

<u>ता. 21/05/70</u>

कहने से माया भाग जाती है। मैं मैं कहने से माया मार देती है। हर वात में भाषा को वदली करो। वावा वावा की ढाल सदैव अपने साथ रखो। इस ढाल से फिर जो भी विघ्न है वह खत्म हो जायेंगे। साथ साथ इकॉनामी करने से व्यर्थ संकल्प नही चलेंगे और नही व्यर्थ संकल्पों का टक्कर होगा।

<u>ता. 28/05/70</u>

कोई भी परिक्षा किसी भी रूप में आये परिक्षा को पास करने लिए अगर हाई जम्प देने का अभ्यास होगा तो कोई भी परिक्षा को पास कर लेंगे।

समस्याओं को मिटाने वाले वनकर निकलना है। न कि खुद समस्या वन जाना है।

वैसे एक तरफ विनाश के नगाडे सामने रखो और दूसरे तरफ अपने राज्य के नजारे सामने रखो, दोनों ही साथ में वुद्धि में रखो। विनाश भी, स्थापना भी। नगाडे भी, नजारे भी। तव कोई भी विघ्न को सहज पार कर सकेंगे।

जव सर्विस पर, कर्तव्य पर हो तो काली रूप चाहिए। माया का कोई विघ्न सामने आने का रहस्य न कर सके।

<u>ता. 29/05/70</u>

विघ्नों को हटाने की पूरी नॉलेज है सर्वशक्तिवान के वच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तो नॉलेज के आधार विघ्न हटाकर सदैव मगन अवस्था रहे। अगर विघ्न हटते नही तो जरूर शक्ति प्राप्त करने में कमी है। नॉलेज ली है लेकिन उसको समाया नही है।

<u>ता. ७.०६.७०</u>

ईश्वरीय बंधनों को अगर तेज करो तो कर्म बंधन आपे ही ढीले हो जायेंगे, बंधन से ही बंधन कटता है। जितना ईश्वरीय बंधन में बंधेंगे उतना कर्म बंधन से छुटेंगे।

<u>ता. २५.०६.७०</u>

जब कोई में माया प्रवेश करती है तो पहली किस रूप में माया आती है? पहले माया भिन्न भिन्न रूप से आलस्य ही लाती है। देह-अभीमान में भी पहला रूप आलस्य का धारण करती है। उस समय श्रीमत लेकर वेरीफाय कराने का आलस्य करते है। फिर देह-अभिमान बढता जाता है। और सभी बातों में भिन्न भिन्न रूप से पहले आलस्य रूप आता है। आलस्य, सुस्ती तथा उदासी ईश्वरीय संबंध से दूर कर देती है। साकार संबंध से, बुध्दि के संबंध से, सहयोग लेने के संबंध से दूर कर देती है।

वर्तमान सुस्ती के रूप से माया की प्रवेशता होती है। इसपर बहूत ध्यान देना है। इस छठे रूप से माया भिन्न भिन्न प्रकार से आने की कोशिश करती है। सुस्ति के भी भिन्न भिन्न रूप होता है। शारीरीक, मानसिक दोनो संबंध में भी माया आ सकती है।

<u>ता.११.०७.७०</u>

अभी है बहुत नाजुक समय। अभी नाज से चलने का समय नहीं है। अगर नाजुक समय में भी कोई नाजों से चलेगे तो रिजल्ट में नुकसान होगा। इसलिए अभी संहारीमूर्त बनना है। विकरालरूप धारी बनना है। तो अब दिन

प्रतिदिन नाजुक समय होना के कारण संहारीमूर्त बनना है। संहार भी किसका? अपने संस्कारों का। अपने विकर्मो पर और विकर्मी आत्मायें जो इस समय हैं उन्हों के ऊपर अब विकराल रूप धारण कर एक सेकेण्ड में भस्म करने का है।

ता. २४.०७.७०

दिन प्रतिदिन सर्विस भी बढ़ती जानी है और समस्यायें भी बढ़ती जानी हैं। एक तरफ संकल्पों की, दूसरी तरफ ईविल स्प्रिट्स (आत्माओं) की भी वृध्दि होगी। लेकिन इसके लिए ऐसा विशेष अटेन्शन रखना पड़े जिससे सर्व बातों का सामना कर सकेंगे। वह यह है कि जो भी बात होती है उसको स्पष्ट समझने के लिए दो शब्द याद रखना है। एक अन्तर दूसरा मंत्र। जो भी बात होती है उसका अन्तर करो कि यह यथार्थ है या अयथार्थ हैं। बापदादा के समान हैं वा नहीं है। बाप समान है वा नहीं है।

ता. २२.१०.७०

अब समय ऐसा आने वाला है जो मास्टर रचयिता, मास्टर नॉलेजफुल बनकर उस आकर्षक पावरफुल स्थिति में स्थित न रहे तो रचना और भी भिन्न-भीन्न रंग-ढंग- रूप और रचेगी। इसलिए फुल बनने के लिए स्टेज पर पूरी रीति स्थित हो जाओ तो फिर कहॉ भी फेल न होंगे। अभी बचपन की भूलें, अलबेलेपन की भूलें, आलस्य की भूलें बेपरवाही की भूलें रही हुई हैं। इन चार प्रकार की भूलों को ऐसे भूल जाओ जैसे सतयुगी दुनिया में भूल जायेंगे। अभी रियायत का समय गया। अभी रूहानियत का समय है। अगर रूहानियत न होगी तो भिन्न-भिन्न प्रकार की माया की रंगत में आ जायेंगे।

इसलिए अभी परीक्षाओं के पेपर देने के लिए तैयार हो जाओ। ईश्वरीय मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं बनना है। आसुरी मर्यादाओं से बेपरवाह बनना है।

समस्याओं को दूर भगाना है और सम्पुणता को समीप लाना है। कहॉ सम्पूर्णता के बजाये समस्यओं को बहुत सामने रखते है। समस्याओं का सामना करें तो समस्या समाप्त हो जाये। सामना करना नहीं आता है तो एक समस्या से अनेक समस्यायें आ जाती है। तो समझा क्या है। कहॉ वह स्नेह और कहॉ समस्या।

ता.३.१२.७०

स्व-स्थिति को मास्टर सर्वशक्तिवान कहा जाता है। इस स्थिति में सर्व परिस्थितियों से पार हो जाते है। इस स्थिति में स्वभाव अर्थात सर्व में स्व का भाव अनुभव होता है।

ता.२१.०१.७१

सदैव अपने को अकालमुर्त समझते चलेंगे तो अकाले मृत्यु से भी, अकाल से, सर्व समस्याओं से बच सकेंगे. मानसिक चिन्ताएं, मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन याद रखना है -- सिर्फ अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना है। इस देह-अभीमान को मिटाने से सर्व परिस्थिति मिट जायेंगी।

ता.१.०३.७१

हरेक को यह वायदा करना है कि समय प्रति समय में सर्विस में मददगार और साथ-साथ शक्ति स्वरूप बन विघ्नविनाशक बनकर ही प्रवृत्ति में रहेंगी. विघ्नों के आने से चिल्लायेंगे नहीं। घबरायेंगे नहीं। लेकिन शक्ति बनकर सामना करेंगे।

ता. ५.०३.७१

जैसे यहा भट्ठी में ऊँची वृत्ति रहती है वैसे ही उंची वृत्ति प्रवृत्ति में भी रखना। वृत्ति चेन्ज की तो फिर प्रवृत्ति की परिस्थितियां स्थिति को डगमग कर देंगी। लेकिन अगर वृत्ति ऐसी ही ऊँची रखेंगे तो प्रवृत्ति में आने वाली अनेक परिस्थितियां आप की स्थिति को डगनग नहीं कर सकेंगी।

ता. ११.०३.७१

माया की तरफ मुँह करने से जो परिक्षायें माया की तरफ से आती है उनको सामना नहीं कर सकते हैं। अगर उस तरफ मुँह न करो तो माया की परिस्थितियों को मुँह दे सको।

ता. १३.०३.७१

परिस्थितियों के अधीन बन संकल्प में थोडे समय के लिए भी परेशानी व उसका थोडा भी लेशमात्र अनुभव करते है, वा उससे भी परे हो गये है? जब बन्धन मुक्त है तो मन को वश अर्थात व्यर्थ संकल्पो के वश नहीं होगे, व्यर्थ संकल्पो पर पुरा कन्ट्रोल होगा परिस्थितियाँ के वश भी नहीं होंगे।

ता.२७.०७.७१

दिन प्रतिदिन जितना जितना अपनी स्मृति की समर्थी में आते जायेंगे अर्थात अपनी आत्मा रूपी नेत्र को पावरफुल बनाते जायेंगे, क्लीयर बनाते जायेंगे उतना उतना कोई भी अगर विघ्न आने वाला होगा तो पहले से ही यह महसूसता आयेगी कि आज कोई पेपर होने वाला है और जितना जितना इनएडवान्स मालूम पड़ता जायेगा तो पहले से ही होशियार होने के कारण विघ्नों में सफलता पा लेंगे।

ता.२०.०८.७१

मैं विजयी हूँ इस स्मृति में रहने से कब भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियां हिला नहीं सकती। अपनी स्थिति की हलचल स्पष्ट को भी अस्पष्ट बना देती है। उलझनों के कारण उज्जवल नहीं बन सकते। इसलिए अपनी स्थिति की हलचल नहीं होगी तो स्मृति क्लीयर होगी।

ता. २.०२.७२

अब परिक्षा का समय चल रहा है। ऐसे समय पर अगर मन्सा में भी श्रीमत के विपरीत व्यर्थ संकल्प वा विकल्प आते है, कहा सूक्ष्म रूप में किसी से भी प्रीत लगी हुई है तो उन्हे विपरित बुध्दि कहेगे। गायन है विनाश काले विपरीत बुध्दि विनश्यती तो अब कोई भी विकर्म करने वाले को सुक्ष्म रूप में सजाओं का अनुभव होगा। और वह अनुभव बहुत कडा है। उनके सीरत से हरेक यह अनुभव करेंगे की इस समय यह आत्मा सजा भोग रही है। कितना भी अपने को छिपाने की कोशिश करेंगे लेकिन छिपा नहीं सकेंगे। वह ऐक सेकंड की सजा अनेक जन्मों के दुःखों का अनुभव करानेवाली है। फिर उन सजाओं से छुट कर अपनी उस स्टेज पर आने में बहुत मेहनत लगेगी। इसलिए अब जरा भी गफलत न करो, नही तो जैसे कहावत है एक का सौ गुणा लाभ मिलता है वैसे एक का सौ गुणा दंड भी मिलेगा। यह बोल अभी प्राक्टिकल में अनुभव होने है।

ता.१५.०३.७२

संगमयुग पर अगर देहभान का त्याग नहीं करेंगे अर्थात देही-अभीमानी नहीं बनेगे, तो संगमयुग के श्रेष्ट भाग्य से वंचीत रह जायेंगे, न अवस्था की वृध्दि होगी और न ही सर्व प्राप्तियों की सिध्दि होगी।

ता.२७.०४.७२

सदा निर्विघ्न अवस्था का अनुभव नही होता। पुरूषार्थ करते भी सफलता नहीं होती। विघ्न, परेशानी उदासी या तुफान आते रहते है। ज्ञान बुध्दि में है, बोलता भी रहेगा परंतू प्राप्ती का नशा नही वा जो शक्ति होनी चाहिये वह नहीं है।

ता.३१.०५.७२

जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति रूप भी मुष्किल कार्य करने को तैयार हो जाता है। इसी रीति जब श्रीमत रूपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करेंगे तो कोई भी मुष्किल परिस्थिति वा माया के विघ्न से घबरायेंगे नहीं।

जब श्रीमत रूपी हाथ अपने उपर सदा अनुभव करेंगे तो कोइ भी मुष्कील परिस्थिति वा मायाके विघ्न से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। इसके लिए चित्रों में भक्त और भगवान का रूप क्या दिखाते है? शक्तियों का चित्र भी देखेगे तो वरदान का हाथ भक्तों के उपर दिखाते हैं। मस्तक के उपर हाथ दिखाते है इसका अर्थ भी यही है कि मस्तक अर्थात बुध्दि में सदैव श्रीमत रूपी हाथ है तो हाथ और साथ होने के कारण सदा विजयी हैं।
सर्विस करते स्थिति और ही शक्तिशाली हो जाती है क्योकि आपकी श्रेष्ठ स्थिति ही इस समय परिस्थितियों को परिवर्तन में लायेगी।

ता.१२.०७.७२

यह बाते तो स्पष्ट है ही कि दिन-प्रतिदिन परिस्थितियां अति तमोप्रधान बननी है। परिस्थितियां वा वायुमण्डल अभी सतोप्रधान नहीं बनने वाला है। अति तमोप्रधान के बाद ही फिर सतोप्रधान बनने वाला है। दिन प्रतिदिन वायुमण्डल बिगडने वाला है ना कि सुधरने वाला। तो ऐसे कमलपुष्प किचड में रहते न्यारा रहता है वैसे अति तमोप्रधान तमोगुणी वायुमण्डल में होते हुए भी अपनी स्थिति सदा सतोप्रधान रहे।

चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे लौकिक सम्बन्ध द्वारा चाहे दैवी परिवार द्वारा कोई भी परिक्षा आवे वा कोई भी परिस्थिति सामने आवे उसमें भी अपने आपको अचल अडोल बना सके। परिक्षाएं बहुत आनी हैं। पेपर तो होने ही है। वैसे समय प्रति समय प्रैक्टिकल पेपर स्वतःही होते रहते है। पेपर प्रोग्राम से नहीं लिया जाता।

ता. ८.०६.७२

धर्म और कर्म अलग करने के कारण आज की जीवन वा परिस्थितिया ऐसी हो गई है। तो अपने आपसे पूछो कि धर्म और कर्म अर्थात धारणायें और कर्म, दोनो की समानता रहती है वा कर्म करते फिर भूल जाते हो? जब कर्म समाप्त होता तब धारणा स्मृतिमें आती है।

ता. १४.०६.७२

परिस्थिति सहज और स्वस्थिति मुष्किल क्यों लगती है? देह भी तो स्व से अलग है ना। तो देह में सहज स्थित हो जाते हो और स्व मे स्थित नहीं होते हो कारण? वैसे भी देखो सदा सुख वा शान्तिमय जीवन तब बन सकती है जब जीवन में चार बाते कायम रही हो। हेल्थ, वेल्थ,हैप्पी और होली यह चार बाते कायम रहे तो दुःख और अशान्ति कभी भी जीवन में अनुभव न करे।

ता.१२.०७.७२

कैसा भी वायुमण्डस हो होई भी परिस्थिति हो लेकीन अपनी स्वस्थिति के आधार से वायुमण्डल को परिवर्तन में ला सकते हो। किसी भी स्थान पर जाते, जमा की हुई शक्तियों के आधार से वायुमण्डल वा परिस्थिति मुझ मास्टर सर्व शक्तिवान को हिला नहीं सकती है ।

ता.१९.०७.७२

कोई को भी किसी समय भी, किस परिस्थिति में किस स्थिति में देखते हो लेकिन वृत्ती और भाव अगर यथार्थ है तो आपके उपर उसका प्रभाव नहीं पडेगा।

कल्याण की वृत्ति और भाव शभचिंतक का होना चाहिए।

ता.६.०८.७२

वृत्ति चंचल ना होगी तो प्रवृत्ति वा परिस्थिति वा प्रकृति के कोई भी विघ्नों वश नहीं होंगे, प्रकृति को दासी, परिस्थिति को स्व-स्थिति, प्रवृत्ति को शुध्द प्रवृति का सैम्पल बनाकर दिखायोंगे। व्रत को हल्का करनें से ही वृत्ति चंचल होती है।

ता. २२.११.७२

लाइट रूप से कोई भी सामने आये तो एक सेकण्ड में अशरीरी बन जाये, वह लाइट रूप से ही होगा। ऐसा चलता फिरता लाइट हाउस हो जावेंगे तो किसी को भी यह शरीर दिखाई नहीं पडेगा। विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिये लाइट हाऊस होना पडे, चलते-फिरते अपना यह रूप अनुभव होना चाहिए।

शक्ति दल की विशेषता है सदा और सर्व समस्यओं को ऐसे पार करे जैसे कोई सीधा रास्ता सहज ही पार कर लेते है। इसी प्रकार शक्तिदल की विशेषता यही है जो समस्याएं उनके लिए चढती कला का सहज साधन अनुभव होगा। समस्या साधन के रूप में परिवर्तन हो जाये। शक्ति दल को सदैव हर समस्या जानी-पहचानी हुई अनुभव होगी।

ता. १३.०४.७३

यदी कोई भी परिस्थिति या व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनता है, तो उसके प्रति घृणा दृष्टि न हो, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति न होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकलें क्योंकि उसी विघ्न से तुम्हारी लगन बढेगी।

ता.४.०५.७३

कैसी भी परिस्थिति हो, कैसी भी परिक्षायें हों लेकिन श्रीमत प्रमाण जिस स्थिति में स्थित होना चाहते हो क्या उसमें स्थित हो सकते हो? ऑर्डर पर एवर रेडी हो? इसी प्रमाण श्रीमत मिले व डायरेक्शन मिले और एक सेकेण्ड में उस स्थिति में स्थित हो जायें दूसरा सेकेण्ड भी न लगे-- इसको कहा जाता है एवर-रेडी।

ता. १.०६.७३

जब स्वयं विघ्न-प्रुफ बनेंगे तब ही दूसरों को भिन्न-भिन्न प्रकार के विघ्नों से बचा सकेंगे। अभी तो समय ऐसा आ रहा है जो सारे भंभोर को जब आग लगेगी, उस आग से बचाने के लिए कुछ मुख्य बातें आवश्यक हैं।
जब इस विनाश की आग चारों ओर लगेगी, उस समय आप श्रेष्ठ आत्माओं का पहला-पहला कर्तव्य हैं, शान्ति का दान् अर्थात शीतलता का जल देना।
भिन्न-भिन्न शक्तियों की उन आत्माओं को उस समय आवश्यकता होगी। बाप के परिचय द्वारा एक सेकेण्ड में अशान्त आत्माओं को शान्त कराने की शक्ति भी उस समय आवश्यक होगी। वह अभी से ही इकट्ठी करनी होगी।

ता.२३.०६.७३

जब वेस्ट खत्म हो जायेगा तब अनुभव करोगे कि आत्मा कैसा भी करती हुई, कैसे भी वातावरण अथवा परिस्थिति में रहती हुई और हंगामे होते हुए भी वो रेस्ट में है। सदा अपने को सुख और शान्ति की शैया पर आराम करता हुआ अनुभव करोगे।
ऐसी परिस्थितियाँ, ऐसा वातावरण जो काटने वाला हो, हिलाने वाला हो और अपने विषं द्वारा मूर्छित करने वाला हो लेकिन ऐसे वातावरण को भी सुख-शान्ति की शैया बना दे।
स्तुति और परिस्थिति -- इन दोंनो बातों को छोड़ना है। परिस्थिति के कारण स्व-स्थिति नहीं होती है और स्तुति के कारण स्थिति नहीं होती।

ता. २८.०६.७३

क्या कर्मयोगी को कर्म आकर्षित करता है या योगी अपनी योगशक्ति से कर्मेन्द्रयों द्वारा कर्म करता है।
यदी कभी भी स्थिति डगमग होती है तो उसका कारण है कि मेला अर्थात मिलन उससे बुध्दि को किनारे कर देते हो। अर्थात मेले से निकल जाते है उसे खेल नहीं समझते हो।

ता. ८.०७.७३

यह माया की भिन्न-भिन्न परिक्षायें व परिस्थितियाँ जो आनी है यह भी आप लोगों के लिए एक खेल है। अगर इसको खेल समझे तो खेल में कभी परेशान नही होंगे। हॅसते रहेंगे, तो परिक्षाये भी एक खेल है।
खेल समझने से जो भी भिन्न-भिन्न वैरायटी संस्कारों का पार्ट देखते हो, उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात खेल नुँधा हुआ है। यह स्मृति में आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी।

ता.२.०८.७३

लवफुल के साथ-साथ पॉवरफुल भी होना चाहिए ताकि उन आत्माओं में भी पॉवर भरे जिससे कि वह समस्याओं का वायुमण्डल का, वायब्रेशन्स का सामना कर सदा काल सम्बन्ध में रहें।
पॉवरफुल स्टेज वाले एक सेकेण्ड में कोई भी वायुमण्डल या वातावरण को, माया की कोई भी समस्या को खत्म कर देंगे, वे कभी हार नहीं खायेंगे। जो भी आत्मायें समस्या का रूप बन कर आती हैं, वह उनके उपर बलिहार जायेंगे।
योग अर्थात याद की शक्ति द्वारा ऑब्जेक्ट प्राप्त होनी चाहिए। वह जो भी संकल्प करेंगे वह समर्थ होंगा और जो की समस्या आने वाली होगी, उनका पहले ही योग की शक्ति से अनुभव होगा कि यह होने वाला हैं। कोई भी संस्कार अपने पुरुषार्थ में विघ्न रूप नहीं बनेगा।

ता.१५.०४.७४

अगर तूफान को तूफान समझा तो हलचल होगी और तोहफा समझा वा अनुभव किया तो उससे उल्लास और हिम्मत अधिक बढ़ेगी। घबराने के बजाय गहराई में जाकर अनुभव के नये-नये रत्न इन परिक्षाओं के सागर से प्राप्त करेंगे।
विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुध्दि में रहेगा, तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। नथिंग न्यू -- यह फाइनल स्टेज।
जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे ही सम्पन्न बननें वाली आत्माओं के सामने अब परिक्षायें व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे। फाइनल पेपर में आश्यर्यजनक बातें क्वेशन के रूप में आवेंगी तब तो पास और फेल हो सकेंगे। न चाहते हुए भी बुध्दि में क्वेशन उत्पन्न न हों, यही तो पेपर है।
इसलिए एकरस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास निरन्तर हो। समस्या का सामना करना है। योग अग्नि को तेज करो तो रास्ता क्लियर हो जावेगा।

<u>ता. २३.०५.७४</u>
कैसी भी परिस्थिति हो, वातावरण हो, वायुमण्डल हो या प्रकृति का तूफान हो लेकिन इन सबके होते हुए, देखते हुए, सुनते हुए, महसूस करते हुए, जितना ही बाहर का तूफान हो, उतना स्वयं अचल- अटल, शान्त स्थिति में स्थित हो सकते हो? अशान्ति में शान्त रहना उसको ही ज्ञानस्वरूप, शक्तिस्वरूप, यादस्वरूप और सर्वगुण-स्वरूप कहा जाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के कारण होते हुए स्वयं निवारण रूप बने, इसको कहा जाता है पुरूषार्थ का प्रत्यक्ष प्रमाण-रूप।
पाँच तत्व अपनी तरफ भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित कर महीन पाप बनाने के विमित्त बनते हैं। पॉच विकारों को समझना और उन्हों को जितना, सहज है लेकिन पँाच तत्वों के आकर्षण से परे रहना, यह महारथियों के लिए विशेष पुरूषार्थ है।

<u>ता.१३.०६.७४</u>
प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी धन काम में नहीं आवेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्रि नहीं हो सकेगी। उस समय पानी की एक दो बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा।
अगर योग-युक्त हैं, तो भल नज़दिक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जावेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, यह सेफ रह जायेंगे, यदि अपनी गफ़लत नहीं है तो।
कैसा भी समय हो यदि शक्तियों का स्टॅाक जमा होगा तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरूर बनावेंगी अर्थात साधन स्वतः जरूर प्राप्त होंगे।
अब जिस भी शक्ति की कमी होगी, वही परीक्षा के रूप में आवेगी।

<u>ता.२६.०६.७४</u>
प्रकृति व परिस्थिति के और व्यक्ति के व वैभव के अधिन रहनेवाली आत्मा कभी अन्य आत्माओं को सर्व अधिकारी नहीं बना सकती।

<u>ता. १६.०१.७५</u>
किसी भी परिस्तिति में घबराओ मत क्योंकि बाप दादा का स्नेह छत्र-छाया केसमान है और वे कभी भी किसी व्यक्ति द्वारा प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

<u>ता. १६.०१.७५</u>
जो बच्चे नयनो में समाये हूए हैं, वे बाप के समान होता है, कोई परिस्थिति व प्रकृति, अर्थात पांच तत्व भी बाप से उन्हे अलग नही कर सकते। गोया वे सदा विजयी, निरंन्तर एक रस और, एक की लगन में मग्न होंगे। एक बाप और बाप-समान सदा ईश्वरीय सेवा। उनकी दृष्टि वृत्ति और स्मृति ये तीनों ही सदा समर्थ रहती है व्यर्थ समाप्त हो जाता है।

ता.२३.०१.७५
विघ्न विनाशक, सर्व-परिस्थितियों को मिटाने वाले, स्वस्थिति व पोजीशन के श्रेष्ठ स्थान और स्वमान कीं सीट जो बापदादा ने संगमयुग पर दी हुई है उस सीट पर सेट नहीं होते हो। अपनी सीट को छोड़कर बार-बार नीचे आ जाते हो। सीट पर रहने से स्वमान भी स्वतः स्मृति में रहता है।

ता. २९.०१.७५
सफलतामुर्त आत्मा माना जिनमें परखने की शक्ति है। ऐसो के सामने प्रकृति व परिस्थिति भी दासी बन जाती है। अर्थात वे प्रकृति व परिस्थिति के उपर सदा विजयी बनते है। वे प्रकृति व परिस्थिति के वशीभूत नहीं होते। ऐसे विजयी को ही सदा सफलता-मूर्त कहा जाता है। इसके लिए तीन स्वरूप से बापकी बात याद रखो। तीनों स्वरूप, अर्थात निराकारी, आकारी और साकारी । जैसे तीन सम्बन्धों में सत-बाप, सत-शिक्षक और सत-गुरू की शिक्षायें स्मिृति में रखते हो, वैसे ही तीन स्वरूपों से तीन मुख्य बातें स्मृति में रखो।

ता. ७.०२.७५
सर्व को सन्तुष्ट करने का मुख्य साधन कौनसा है? मुख्य बात यह है कि जैसा समय, जैसी परिस्थिति, जिस प्रकार की आत्मा सामने हो, वैसा अपने को मोल्ड कर सकें। अपने स्वभाव और संस्कार से वशीभूत न हों। स्वभान व संस्कार ऐसे अनुभव हों। जैसे स्थुल रूप में जैसा समय, वैसा रूप, जैसा देश वैसा वेश बनाया- ऐसा सहज अनुभव होता है? ऐसे अपने स्वभाव, संस्कार को भी समय के अनुसार परिवर्तन कर सकते हो?

ता.८.०२.७५
सभी अपने को निश्चय रूपी आसन पर स्थित अनुभव करते हो? निश्यच का आसन कभी हिलता तो नहीं है? किसी भी प्रकार की परिस्थिति या प्रकृति या कोई व्यक्ति निश्चय के आसन को कितना भी हिलाने का प्रयत्न करे, लेकिन वह हिला न सके -- अचल-अडोल आसन है? निश्चय के आसन में सदा अचल रहने वाला "निश्चय बुध्दि विजयन्ति" गाया हुआ है। तो अचल रहने की निशानी है--रह संकल्प, बोल और कर्म में सदा विजयी।

ता. ३.०८.७५
चारों तरफ वातावरण योगयुक्त और युक्तियुक्त हो। ऐसे समय में चारों ओर सर्व-शक्तियों का स्वयं में अटेन्शन चाहिए। अगर जरा भी एटेन्शन कम होगा तो जैसे समय प्रमाण चारों ओर टेन्शन (तनाव) बढ़ता जाता है ऐसे ही चारों ओर टेन्शन के वातावरण का प्रभाव, युद्ध में उपस्थित हुए रूहनी पाण्डव सेना में भी पड सकता है।
दिन-प्रतिदिन जैसे सम्पूर्णता का समय नजदीक आता जावेगा तो दुनिया में टेन्शन और भी बढ़ेगा कम नहीं होगा। खींचातान के जीवन का चारों ओर अनुभव होगा जैसे की चारों ओर से खींचा हुआ होता है। एक तरफ से प्रकृति की छोटी-छोटी आपदाओं व नुकसान का टेन्शन, दूसरी तरफ इस दुनिया की गव्हर्नमेन्ट के कडे लॉज का टेन्शन, तीसरी तरफ व्यवहार में कमी का टेन्शन, और चौथी तरफ जो लौकिक सम्बधी आदि से स्नेह और फ्रिडम होने के कारण खुशी की भासना अल्प काल के लिये रहती है वह भी समाप्त होकर भय की अनुभूति के टेन्शन में, चारों ओर का टेन्शन लोगों में बढ़ना है। चारों ओर के टेन्शन में आत्मायें तड़पेंगी। जहाँ जावेंगी वहाँ टेन्शन। जैसे शरीर में भी कोई नस खिंच जाती है तो कितनी परेशानी होती है। दिमाग खिंचा हुआ रहता है। ऐसे ही यह वातावरण बढ़ता जावेगा। जैसे कि कोई ठिकाना नजर नहीं आवेगा कि क्या करें? अगर हाँ करे तो भी खिंचावट-- ना करें तो भी खिंचावट -- कमावे तो भी मुष्किल न कमावे तो भी मुष्किल। इकट्ठा करे तो भी मुश्किल न करे तो भी मुश्किल। ऐसा वातावरण बनता जावेगा। ऐसे टाइम पर चारों ओर के टेन्शन का प्रभाव रूहानी पाण्डव सेना पर न हो। स्वयं को टेन्शन में आने की समस्यायें न भी हों, लेकिन वातावरण का प्रभाव कमजोर आत्मा पर सहज ही हो जाता है।

ता. २६.०८.७५

अपने कम्बाइण्ड रूप शिव-शक्ति के रूप की स्मृति में रहना चाहिए। शिव-शक्ति, कम्बाइण्ड रूप की स्थिति से जैसे स्थूल में दो को देखते हुए वार करने के लिए संकोच होता है-- वैसे ही कम्बाइण्ड स्थिति का प्रभाव उस समय के प्रकृति और व्यक्ति के उपर पड़ेगा अर्थात किसी भी प्रकार के वार करने में संकोच होगा। न सिर्फ व्यक्ति लेकिन प्रकृति का तत्व भी संकोच करेगा अर्थात वह भी वार नहीं कर सकेगा। एक कदम की दूरी पर भी सेफ हो जावेंगे।

फाइनल पेपर की रूप-रेखा तो कई गुना भयानक रूप की होगी। लेकिन शक्तिस्वरूप का प्रैक्टिकल पार्ट व शक्ति अवतार की प्रत्यक्षता का पार्ट, स्वयं द्वारा सर्वशक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने का पार्ट ऐसी ही परिस्थिति में होना है। इसलिए ऐसे नजारों को, अकाले मृत्यु के नगाड़ो को देखने और सुनने के लिये परिवर्तन की शक्ति को बढ़ावो, साक्षीपन की स्टेज और विश्व-कल्यामकारी स्टेज भी।

ता. १४.०९.७५

शक्तिशाली परिस्थितियों को मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति वाले ही सहज पार कर सकते हैं।

दिन-प्रतिदिन प्रकृति द्वारा विकराल रूप तो अब प्रकृति धारण करेगी जिसमें विशेष आपदाओं का वार अचानक ही होगा।

एक ही समय प्रकृति के सभी तत्व साथ-साथ और अचानक वार करेंगे। किसी भी प्रकार के प्रकृति के साधन समस्या का रूप बनेंगे।

अपने अकाल-तख्तनशीन अकालमुर्त बनने से महाकाल बाप के साथ-साथ मास्टर महाकाल स्वरूप में स्थित होंगे तब ही सामना कर सकेंगे। महाविनाश देखने के लिये मास्टर महाकाल बनना पडेगा।

अकालमुर्त बनने की विधि है -- हर समय अकालतख्त नशीन रहना। जरासा भी देहभान होगा तो अकाले मृत्यु के समान अचानक के वार में हार खिला देगा।

जैसे प्रकृति के पॉच तत्व विकराल रूप में ट्रायल करेंगे, अर्थात माया और प्रकृति दोनों ही अपना फुल फोर्स का अन्तिम दाव लगायेंगे।

ऐसे समय में समेटने की शक्ति आवश्यक हैं। जो अपने देह-अभीमान के संकल्प को, देह की दुनिया की परिस्तितियों के संकल्प को, क्या होगा? इस हलचल के संकल्प को भी समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को भी, वा अपनी आवश्यकताओं के साधनों की प्राति के संकल्प को भी समेटना है। घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो।

ता.२०.१०.७५

परिस्थितियों व परीक्षाओं --वश अटेन्शन बदल, टेन्शन का रूप हो जाता है। ऑलमाइटी अथॉरिटी के बदले माया के वशीभूत होने के कारण वशीकरण मन्त्र कामं नहीं करता अर्थात युक्ति मुक्ति नहीं दिलाती है।

जब रचयिता पन भूलते हो तब माया अर्थात देह-अभीमान तुम रचयिता के उपर रचयिता बनती है अर्थात अपना अधिकार रखती है। माया के आगे रचना बन जाते हो और अधीन बन जाते हो।

ता.२३.१०.७५

अंगद समान अडोल बनना अर्थात अन्तिम घड़ी लाना। तो संगठित रूप से ऐसे एक संकल्प को अपनाओ अर्थात दृढ संकल्प की इकट्ठी अंगुली सभी दो, तो यह कलीयुगी पर्वत परिवर्तन करके गोल्डन वर्ल्ड को ला सके।

ता.८.१२.७५

समय के प्रमाण, वर्तमान स्थिति हर समय सर्व प्राप्ति के अनुभव की होनी चाहिए।

ता.१८.०१.७६

जितना ही अति स्नेह, उतना ही अति नष्टोमोहः। स्नेह होते हुए भी नष्टोमोहः स्मृतिस्वरूप। एक तरफ स्नेह को समाना, दूसरी तरफ रहा हुआ लास्ट का हिसाब-किताब सहनशक्ति से समाप्त करना। स्वरूप में लाना सहज होता है-- लेकिन समाना, इसमें विलपॉवर चाहिए।

ता.२३.०१.७६

आजकल सर्व परेशानियों से परेशान निर्बल आत्मायें, मंजिल को ढुंढने वाली आत्मायें और सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये तडफती हुई आत्मायें पुरुषार्थ की विधि नहीं चाहती, बल्कि विधिं के बजाय सहज सिध्दि चाहती है। सिध्दि के बाद विधि के महत्व को जान सकेगी।
वर्तमान स्वरूप चाहिए प्रेमस्वरूप। लॉफुल नहीं, लेकिन लवफुल, पहले लव दो फिर लॉ दो। ऐसे समय पर ऐसी आत्माओं की सर्व मनोकामनायें पूर्ण करने वाली व मन-इच्छित फल देने वाली कौन सी आत्मायें निमित्त बनेंगी?
जो स्वयं सिध्दि-स्वरूप हों, दिन-रात विघ्नों को मिटाने की विधि में न हो। स्वयं बापदादा द्वारा मिले हुए प्रत्यक्ष फल अतीन्द्रिय सुख व सर्व शक्तियों के वरदान प्राप्त हुई वरदानी-मुर्त आत्माये होंगी।
ऊँची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो। ऐसी स्थिति में रहने वाला ही समस्या-स्वरूप नहीं लेकिन समाधान-स्वरूप हो जायेगा।

<u>ता. १.०९.७५</u>
फाइनल पेपर में चारों ओर की हलचल होगी। एक तरफ वायुमण्डल व वातानरण की हलचल। दूसरी तरफ व्यक्तियों की हलचल। तीसरी तरफ सर्व सम्बन्धों में हलचल और चौथी तरफ की हलचल के बीच अचल रहना यही फाइनल पेपर होना है। किसी भी आधार द्वारा अधिकारीपन की स्टेज पर स्थित रहना -- ऐसा पुरुषार्थ फाइनल पेपर के समय सफलतामूर्त बनने नहीं देगा। वातावरण हो तब याद की यात्रा हो, परिस्थिति न हो तब स्थिति हो, अर्थात परिस्थिति के आधार पर स्थिति वा किसी भी प्रकार का साधन हो तब सफलता हो, ऐसा पुरुषार्थ फाइनल पेपर में फेल कर देगा।
इसलिए स्वयं को बाप समान बनने की गति तीव्र करो। इम्तहान के लिए एवररेडी हो? अलबेलापन तो नहीं है नं? खबरदार होशियार हो न? एवररेडी अर्थात अभी-अभी किसी भी परिस्थिति व वातावरण में ऑर्डर मिले कि एक सेकण्ड में सर्व कर्मेन्दियों की अधीनता से न्यारे हो, कर्मेन्द्रिय जित बन एक समर्थ संकल्प में स्थित हो जाओ तो श्रीमत मिलते हुए मिलना और स्थित होना साथ-शाथ हो जायें। बाप ने बोला और बच्चों की स्थिति ऐसी ही उस समय बन जाये उसको कहते है एवररेडी। सब बातों में कहाँ तक समान बने है यह चेकींग करो। लास्ट ऑर्डर रुहानी मिलीटरी को कितने समय में मिलेगा? एक सेकंण्ड का होगा-- एक घण्टा पहले इतला नहीं होगी। तब तो आठ रत्न निकलते है। डेट निश्चित बना करके पेपर नहीं लेंगे। अर्थात लास्ट डेट जो ड्रामा में निश्चित है, वह निश्चित डेट और समय नहीं बतलाया जायेगा। यह तो एवरेज बताया जाता है लेकिन लास्ट पेपर एकही क्वेश्चन का और एक ही सेकण्ड का होगा इसलिए बच्चोंको एवररेडी बनना है। हर समय स्वयं को चेक करो कि समेटने की शक्ती और सामना करने की शक्ती दोनों शक्तियों से सम्पन्न बन गये हो? समेटने की शक्ती का सबुत समय से कर्तव्य में लाने का अभ्यास चाहिए। लास्ट समय समेटना शुरू नहीं करना। समेटते समेटते ही समय बीत जायेगा। तब एक बल एक भरोसा व निरंतर तुम्ही से खाऊँ, तुम्हीसे बैठूँ, तुम्हीसे बोलूँ और तुम्हीसे सुनूँ का किया हुआ वायदा निभा सकेंगे।
जैसे आज हद का सिनेमा व ड्रामा कलियुगी मनुष्यों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है-- छोडना चाहते हुए भी और न देखना चाहते हुए भी हद के ॲक्टर्स की ॲक्ट अपनी और खींच लेती है, लेकिन उसका आधार लाइट है ऐसे ही अंतिम समय में माया के आकर्षण की आति के बाद अन्त होने पर बेहद के हिरो ॲक्टर्स जो सदा जीरो स्वरूप में स्थित होते हुए जिरो बाप के साथ हर पार्ट बजाने वाले है और दिव्य ज्योतिस्वरूप वाले जिनकी स्थिति भी लाइट की है और स्टेजपर पार्ट भी लाइट में है-- अर्थात जो डबल लाइट वाले फरिश्ते है, वे हर आत्मा को स्वतःही अपनी तरफ आकर्षित करेंगे। फरिश्तों के नयन दिव्य दूर दर्शन के काम करेंगे। हर एक के नयनों द्वारा सिर्फ इस संसार के ही नहीं लेकिन तीनो लोकों का दर्शन करेंगे। एसे फरिश्तों के युक्तीयुक्त बोल अर्थात अमूल्य बोल, हर भिखारी आत्मा की रत्नों से झोली भरपूर करेंगे।

<u>ता. २.०९.७५</u>
लास्ट पेपर एक ही क्वेशन का और एक ही सेकेण्ड का होगा। इसलिए बच्चों को एवररेडी बनना है।
समेटने की शक्ति का बहुत समय से कर्तव्य में लाने का अभ्यास चाहिए।

<u>ता. ६.०९.७५</u>
माया के विघ्नों को बाप की लगनमें मगन होने का साधन समझ परिवर्तित कर दें -- ऐसी विजयी वत्स अष्ट रत्न ही बनते है।

<u>ता. १३.०९.७५</u>

कोई भी इस कल्याणकारी युग में परिस्थिति आती है तो उस परिस्थिति को न देख, वर्तमान को न देख, वर्तमान में भविष्य को देखो। मानो कोई दुःख देता है वा गाली देता है तो उसमें भी यह देखो कि मेरा कल्याण है। कल्याण यह है कि वह दुःख अथवा गाली ही सुखदाता की याद के नजदिक लायेगी। बाहर के रूप से न देखो, कल्याण के रूप से देखो तो कोई भी परिस्थिति कठिन परिस्थिति नहीं लगेगी। इससे अपनी उन्नती कर सकोगे। अति के समय एक सेकेण्ड में अति हो जायें। अभी-अभी अति, अभी-अभी अन्त। यह है लास्ट वर्ष लास्ट स्टेज का पुरूषार्थ।

ता. २५.०१.७६
किसी परिस्थिति में देहधारी की याद आये कि यह मुझे परिस्थिति से पार करेंगे, राय देंगे या सहारा देंगें-- इससे सिध्द है कि सर्वशक्तिवान का सहारा सदा साथ नहीं रहता।

ता.२.०२.७६
परिवर्तन वाला कैसी भी परिस्थिति में सफल हो जाता है क्योंकि वह बहुरूपी होता है।

ता.७.०२.७६
जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, तो वैसे अपने शक्तिशाली रूप को बना सको। अगर परिस्थिति सामना करने की है तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ। अगर परिस्थिति सहन करने की है, तो सहन शक्ति स्वरूप हो जाओ। जैसा समय वैसा स्वरूप धारण करने की शक्ति हो।
कोई भी कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बडे रूप की समस्या हो लेकिन अपनी स्टेज ऊँची होने के कारण वह बिल्कुल छोटी लगेगी। बडी बात अनुभव नही होगी और न विकराल अनुभव होगी। जैसे ऊँची पहाडी पर खडे होकर नीचे की कोई भी चीज़ को देखो तो बडी चीज़ भी चोटी नजर आती है ना, बडे से बडा कारखाना भी एक मॉडल रूप-सा दिखाई पड़ता है। इसी रिति महारथी के महान पुरूषार्थ के सामने उसे कोई भी बड़ी बात बड़ी अनुभव नहीं होगी।

साकार वाणी

ता. २.०१.९७
अनेक प्रकार के मन्सा तूफान भी आयेंगे और नॅचरल कैलेमिटीज, बिमारियाँ आदि भी आयेगी क्योंकि अब पिछाडी का पाम्प है। माया खूब झोके लगायेगी। जो पक्के निश्चयबुध्दि हैं उन्हों को तो मालूम पडता है कि शरीर के हिसाब-किताब भी चुक्तू होंगे।
तूफान से डरना नहीं है। ज्ञान मंथन से बुध्दि को भरपूर रखना है।

ता.६.०१.९७
समय और परिस्थिति प्रमाण अपनी श्रेष्ट स्थिति बनानेवाले अष्ट शक्ति सम्पन्न। कोई भी परिस्थिति उन्हें श्रेष्ठ स्थितिसे नीचे नहीं उतार सकती।

ता. ७.०१.९७
नथिंग न्यु की युक्ति द्वारा हर परिस्थिति में मौज की स्थिति का अनुभव करनेवाले अचल अडोल भव।

ता.१०.०१.९७
बाप कहते है माया के तुफान तो आयेंगे परन्तु तुम स्थेरीयम रहना। बाप कहते यह बॉक्सिंग है। घडी-घडी गिरते तो कमजोर बन जायेंगे।

ता. १५.०१.९७
यह सब ड्रामा में नूँध है। तूफान, नैचुरल कैलेमिटिज आनी ही है और सब खण्ड खत्म होंगे।

ता. १६.०१.९७
अब बाप कहते है-- मुझे याद करो। विनाश सामने खड़ा है, मुझे याद करेंगे तो स्वर्ग का मालिक बनेंगे।
अर्थक्वेक आदि होंगे, सभी डैम्स आदि फट पडेंगे। आफते तो बहुत आनेवाली है। जिनको ज्ञान होगा वह तो डांस करते रहेंगे।

ता.१७.०१.९७
परमात्म प्यार में वह शक्ति है जो कोई भी परिस्थिति उसे रोक नहीं सकती। परमात्म प्यार बुध्दिवानों की बुध्दि बन परिस्थिति को श्रेष्ट स्थिति में बदल देता है। असम्भव कार्य भी संभव हो जाते है। बापदादा का वायदा है कि हर समस्या को पार करने में प्रीति निभाते रहेंगे।
अपने श्रेष्ट कर्म वा श्रेष्ट चलन द्वारा दुआयें जमा कर लो तो पहाड़ जैसी बात भी रूई के समान अनुभव होगी।

ता.१९.०१.९७
बाबा कहते हैं वर्सा लेलो, मनुष्य को मरने में देरी नहीं लगती है। आफतें आदि बहुत होती है। आप सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो।

ता. २४.०१.९७

बाप और मैं यह छत्रछाया है तो कोई भी विघ्न ठहर नहीं सकता।

ता. २५.०१.९७
हर परिस्थिति में सहनशिल बनो तो मौज का अनुभव करते रहेंगे।

ता. २९.०१.९७
अनेक प्रकार के तूफानों में रहते स्वयं को स्थेरीयम बनाना है। माया की चोट से बचने के लिए बहुत-बहुत खबरदार रहना है।

ता.६.०२.९७
विघ्न ही आत्मा को बलवान बनाते है, इसलिए विघ्नों से डरो मत।

ता.७.०२.९७
माया कितने भी रंग दिखाये, मैं मायापति हूँ, इस स्मृति से माया का खेल देखो, खेल में हार नहीं खाओ। साक्षी बनकर मनोरंजन समझकर देखते चलो तो उनके लिए माया की कोई समस्या, समस्या नहीं लगेगी। कोई क्वेश्यन नहीं होगा।

ता. ११.०२.९७
बाबा ने तो समझा दिया है कि ज्ञान यज्ञ में अनेक प्रकार के विघ्न तो पडेंगे। बहुत अत्याचार होंगे। कामेशु, क्रोधेशु हैं ना। विष न मिलने के कारण मारते है। कन्याओं को भी शादी के लिए बहुत मारते हैं। बाबा तो कहते हैं जो श्रीमत पर चलेंगे वो श्रेष्टाचारी बनेंगे।

ता. २४.०२.९७
जो स्मृतिस्वरुप है, वह हर परिस्थिति में सदा अचल रहते हैं, परिस्थिति रुपी बड़े से बड़ा पहाड भी आ जाए, संस्कार टक्कर खाने के बादल भी आ जाए, प्रकृति भी पेपर ले लेकिन अंगद समान मन-बुध्दि रुपी पांव को हिलने नहीं देते।

ता. १.०३.९७
लास्ट समय में चारों ओर न्यक्तियों का, प्रकृति का हलचल और आवाज होगा। चिल्लाने का, हिलाने का वायुमंडल होगा। ऐसे समय पर सेकण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ, यह अभ्यास ही विजयी बनायेगा।

ता.८.०३.९७
बाबा कहते हैं बच्चे गन्दे विकल्प बहुत आयेंगे, परन्तु कर्मेन्द्रियाँ से कोई काम नहीं करना।

ता.११.०३.९७
माया की फागी पड़ी जबरदस्त है, उससे खबरदार रहना है, फागी (बादल) में कभी भी मूँझना नही

ता.१५.०३.९७
त्रिकालदर्शी स्थिति द्वारा मूंझने की परिस्थितियों को मौज में परिवर्तन करना।

ता.१८.३.९७
स्व स्थिति को ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो परिस्थितियां उसे नीचे ऊपर न कर सकें।

ता.२१.०३.९७
जो बाप से सदा सच्चे रहते, प्रतिज्ञा कर विकारों का दान देकर वापिस लेने का संकल्प नही करते, वह विकर्मोंसे बच जाते हैं। बाप की सहायता उन्हें मिलती जो कर्म, विकर्म बनने के पहले राय लेते हैं। साकार को अपना सच्चा सच्चा समाचार देते हैं। बाबा कहते बच्चे, सर्जन के आगे कभी अपनी बीमारी छिपाना नहीं। पापों को छिपायेंगे तो वृध्दि होती रहेगी, पद भी भ्रष्ट हो जायेगा, सजायें भी खानी पड़ेंगी।

ता.२२.०३.९७
विघ्न विनाशक वही बनता है जो सर्व शक्तियों से सम्पन्न है।

ता.३०.०३.९७
विघ्न प्रूफ बनने के लिए दुआओं का खजाना जमा करो।

ता. १.०४.९७
संगठन में रहते सदा निर्विघ्न और सन्तुष्ट रहने के लिए जितनी सेवा उतना ही न्यारापन हो। कितना भी कोई हिलाये, एक तरफ एक डिस्टर्ब करे, दूसरे तरफ दूसरा। कोई सैलवेशन नहीं मिले, कोई इनसल्ट कर दे, लेकिन संकल्प में भी अचल रहो तब कहेंगे निर्विघ्न आत्मा।
देही अभिमानी स्थिति द्वारा तन-मन की हलचल को समाप्त करने वाले ही अचल-अडोल रहते हैं।

ता. ७.०४.९७
इतना मजबूत बनना है । पहले-पहले आफते आयेंगी फैमन की। बाहर से अनाज आ नहीं सकेगा, मारामारी हो जायेंगी, उस समय निडर बनना पड़े।

ता.९.०४.९७
बुध्दि रुपी हाथ बापदादा के हात में दे दो तो परीक्षाओं रुपी सागर में हिलेंगे नहीं।

ता.२३.०४.९७
सदा निर्विघ्न वही रह सकता है जो सी फादर, फालो फादर करता है। सी सिस्टर,सी ब्रदर करने से ही हलचल होती है। इसलिए अब बाप को फालो करते हुए बाप समान संस्कार बनाओ तो संस्कार मिलन की रास करते हुए सदा निर्विघ्न रहेंगे। शान्ति की शक्ति से अथवा शान्त रहने से कितना भी बडा विघ्न सहज समाप्त हो जाता है।

ता.२०.०५.९७
कैसी भी परिस्थिति अथवा समस्याओं के पहाड भी आ जायें तो भी उडने वाले कभी रुकेंगे नहीं।

ता.५.०६.९७
नॉलेज की शक्ति धारण कर लो तो विघ्न वार करने के बजाय हार खा लेंगे।

ता.१३.०६.९७
बीमारी आदि होती है तो अपने ही कर्म कहे जाते है। अनेक जन्मों के विकर्म किये हैं, इस कारण भोगना होती है। इसलिए कभी भी इससे डरना नहीं है। खुशी से पास करना है क्योंकि अपना ही किया हुआ हिसाब-किताब है।

ता. १७.०६.९७
अब बाप कहते हैं "हे देहधारी आत्मायें अब वापिस चलना हैं, सिर्फ मुझे याद करो"। कभी भी देहधारी में लटके तो रोना पडेगा। तुम्हारा रोना २१ जन्मों के लिए बन्द हो जाता हैं। कोई मरे और तुम रोने लग पड़ेगे फिर रोने प्रुफ तो बनेंगे नहीं। किसकी याद में शॉक आ जाए और मर जाएं तो दुर्गती हो जाये।

ता.१८.०६.९७
अकालतख्त नशीन सो दिलतख्तनशीन बनो और इसी रुहानी नशे में रहो तो कोई भी विघ्न वा समस्या आपके सामने आ नहीं सकती। प्रकृती और माया भी वार नही कर सकती। तो तख्तनशीन बनना अर्थात सहज प्रकृतीजीत और मायाजीत बनना।

ता. १९.०६.९७
जो साइड सिन दिखाई देती है, पुराने संस्कार वातानरण अपने तरफ आकर्षित करता है, उससे किनारा कर लो तो फिर ढिलापन नहीं आयेगा।

मम्मां ने कहा कि अभी सबके सामने दो पेपर आयेंगे-- एक प्रकृती का पेपर और दूसरा अशुध्द संस्कारों के फोर्स का पेपर। यह दोंनो पेपर आयेंगे। लेकिन योग की शक्ति से, स्नेह की शक्ति से आप लोगों को इन पेपर्स मे पास होना है। इसलिए अभी अपने योग की शक्ति को प्रयोग में लाओ तब आने वाले समय में आप सफलता पूर्वक उसका सामना कर सकेंगे।

ता.२८.०६.९७
कलियुग का विनाश सामने खडा है। बडे अन्धेरे में पड़े है। भल पदमपति, करोडपति हो गये है। रावण का बड़ा पाम्प है, इसमें ही ललचायमान हो गये है। बाप समझाते हैं यह झूठी कमाई है, जो सारी मिट्टी में मिल जोयेगी। उन्हों को हासिल कुछ भी नहीं होना है। तुम तो भविष्य २१ जन्मों के लिए बाप से वर्सा लेने आये हो।

ता.१०.०७.९७
पूरा निश्चय न होने से ही अवस्था डावाडोल होती है। जैसे पारा है ना। अभी-अभी खुशी का पारा चढता है। अभी-अभी भूल जायेगे।

ता.१२.०७.९७
बाप को भुलने के कारण तुम घबराते हो, हैरान होते हो और विकर्म करते हो। लाडले बच्चे मुझे याद करो तो विकर्मो का बोझा उतर जाये. नहीं तो भोगना पडेगा फिर उस समय बहुत फिल होगा। अन्त में ऐसी भासना आती है जैसे बहुत समय से भोगना भोग रहे है)

ता. १९.०७.९७
यह सितम तो होगे ही, सितम भी कर्मभोग है। पुरुष स्त्री को मारता है, ऐसे ही कोई मार सकता है क्या? तुमने भी मारा होगा। वही हिसाब किताब चुक्तु हो रहा है।

ता. २३.०७.९७
एक तो बीमारी आदि का दूसरा फिर विकर्मों की सजा। उस समय कुछ बोल नहीं सकते, चिल्लाते रहते है। त्राहि-त्राहि करते है। पाप आत्माओ को यहाँ भी सजा वहाँ भी सजा मिलती है।
भुलेगे तो जरूर तुफान आयेगा। बुध्दि को बाहर के तुफानो से हटाये अशरीरी बनकर बैठो। अपने को आत्मा समझो। आत्मा समझने से बुध्दि कहाँ भी भटकेगी नहीं।

ता.१०.०८.९७
घर मे भी किसीपर क्रोध नही करो। ख्यालात आने चाहिऐ कि जैसा कर्म हम करेंगे, हमे देख फिर और करेंगे। मै विकारी बनुंगा तो मुझे देख और भी विकारी बनेगे।

ता.१६.०८.९७
संग उनका होना चाहिए जो ज्ञान की टिक्लु-टिक्लु करते है। ऐसे नही जो
झरमुई -झगमुई करते, किसकी निंदा करते -- उनका संग न हो। सिवाए ज्ञान के कोई बात नहीं सुनना चाहिए। कोई झरमुई -झगमुई करते है तो समझो हमारा दुश्मन है।

ता.१३.१.२००३
स्मृतिस्वरूप आत्मा समर्थ होने के कारण परिस्थितियों को खेल समजती है। भल कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो लेकीन समर्थ आत्मा के लिए मंजिल पर पहुंचने के लिए यह सब रास्ते के साइडसीन्स हैं। स्मृतिस्वरूप समर्थ आत्मा के लिए परिस्थिति कहो, पेपर कहो, विघ्न कहो सब साइडसीन्स अनगीनत बार पार ही हैं, नथिंग न्यु।

ता.२०.१.२००३
ज्ञान और योग की लाइट माइट से सम्पन्न बनो तो किसी भी परिस्थिति को सेकेण्ड में पार कर लेंगे।

ता.२३.१.२००३

"बुध्दि का योग बाप से लगाते रहो तो लम्बी मुसाफिरी को सहज ही पार कर लेंगे" वैरायटी रूप से जिरो बन अपने हीरो पार्ट की स्मृति में रहो तो उमंग -उत्साह से बरपूर रहेंगे और सब विघ्न सहज समाप्त हो जायेंगे।

ता.३.२.२००३

बुध्दिवान अर्थात गणेश। गणेश अर्थात विघ्न-विनाशक। वह किसी भी परिस्थिती में विघ्न रूप नहीं बन सकते। यदी कोई विघ्न रूप बनें भी तो आप विघ्न-विनाशक बन जाओ, इससे विघ्न खत्म हो जायेंगे। विघ्न-विनाशक आत्मा यें वातावरण, वायुमण्डल को भी परिवर्तन कर देती हैं, उसका वर्णन नही करती।

परिस्थितियों में घबराने के बजाय साक्षी हो जाओ तो विजयी बन जायेंगे।

ता. ८.२.२००३

संकल्प तो बहुत आयेंगे, माया बहुत परीक्षा लेगी डरना मत। नुकसान होंगे, धन्दा नहीं चलेगा, टांग टुट जायेगी, बीमार पडेंगे.... कुछ भी हो जाये बाबा का हाथ नहीं चोड़ना। अनेक प्रकार की परीक्षायें आयेगी।
सेवा समझ कर त्याग और तपस्या का वातावरण बनाने से सदा विघ्न विनाशक रहेंगे।

ता.१४.२.२००३

बाकी तुम्हारे सामने कोई विपदा आती , दु:ख वा बीमारी आती, देवाला मारते....यह सब तुम्हारे अपने ही कर्मों का हिसाब है, इसमे बाप का कोई तैलुक नहीं।

ता.१९.२.२००३

यह तो बच्चे समझते हो कि ज्ञान मार्ग में जरूर विघ्न पड़ते है क्योंकि पवित्रता का सवाल है। इस समय तो मनुष्य बहुत गन्दें है। विघ्न भी बहुत डालेंगे, झुठा कलंक भी लगायेंगे। इन बातों से डरना नहीं है। कुछ भी हो घबराना नहीं चाहिए। ५ हजार वर्ष पहले भी यह कलंक लगे थे। अब भी लगेंगे। झूठी-झूठी बनावटी बातें भी करेंगे।

ता. २६.२.२००३

जब स्वयं को ट्रस्टी समझकर रहेंगे तो हर परिस्थिति में स्थिति एकरस रहेगी क्योंकि ट्रस्टी अर्थात न्यारे और प्यारे।

ता.१३.३.२००३

किसी भी तूफान के कारण निश्चय में कमी न आये--- इसके लिए संग दोष से अपनी संभाल करनी है।

मुख्य परीक्षा आती है काम और क्रोध के रूप में। यह दोनों परिक्षा मुश्किल ही पीछा छोडते है। क्रोध का भूत घड़ी-घड़ी दरवाजा खड़खड़ाता है। देखता है यह कहाँ भौं -भौं तो नहीं करते। अनेक प्रकार के तूफान दीपक को हिलाने की कोशिश करते हैं। इन परिक्षाओं में अडोल रहने के लिए एक सर्वशक्तिमान बाप से योग रखना है। अन्दर खुशी के नगाड़े बजते रहे। ज्ञान और योगबल ही इन परीक्षाओं से पार कर सकता है।

बाप समझाते है " हे दिवे ऐसे-ऐसे तूफान आयेंगे, परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई पाप कर्म नहीं करना है।" कोई ने कुछ कहा तो एक कान से सुन दुसरे से निकाल दिया, ऐसा अभ्यास करना पडे। क्रोध भी पूरा ही सत्यानाश कर देता है।

बॉक्सिंग मे घडी--घडी थप्पड खाते गिरते नहीं रहना है। विकार में गिरा तो एकदम जोर से चोट लग जाती है।

ता.११.४.२००३

किसी भी कारण कुल कलंकित नहीं बनना है, धरत परीये धर्म न छोडीये, बाप से किया हुआ वचन सदा याद रहे।

ता.८.५.२००३

मनन शक्ति के आधार से ज्ञान खजाने को अपना बना लो तो विघ्न विदाई ले लेंगे।

ता. १६.५.२००३

माया के तुफानें की परवाह नहीं करनी है। मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई .... इस विधी से तूफान हटा देने हैं।

ता. २३.५.२००३

मामेकम याद करो तो विकर्म विनाश होंग। श्रीमत पर न चले, देह अभिमान आया तो लगी चोट। फिर ब्रहस्पति की दशा बदलकर राहू का ग्रहण बैठ जाता है। फारकती दी तो रौरव नर्कवासी बन जाते है।

ता.२.६.२००३

तुम्हारे दुश्मन तो अनेक हैं, विघ्न डालेंगे, कलंक लगायेंगे, गाली देंगे----
लेकीन याद रहे कि कलंक लगने से ही तुम कलंगीधर बनते हो।

सजाओं के अनुभव को ही धर्मराजपुरी कहते हैं, बाकी धर्मराजपुरी कोई अलग स्थान नहीं है, लास्ट में अपने किये हुए पाप जमदूत के डरावने रूप में सामने आते हैं। उस समय पश्चातप और वैराग्य की घड़ी होती है। छोटे-छोटे पाप भी भूत की तरह लगते हैं। पश्यताप की त्राही-त्राही होती है। इसलिए इन सजाओं की फीलिंग से बचने केलिए कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बन सदा श्रेष्ठ कर्म करो और विकर्माजित बनो।

ता.७.६.२००३

अभी तुम आसुरी कुल से ईश्वरीय कुल में आयें हो फिर अगर आसुरी कुल में गये अथवा उनको याद किया तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। नहीं तो अन्त में बहुत रोना, पछताना पड़गा। पापों का बोझा रह जाता है तो फिर तुम्हारे लिए ट्रिब्युनल बैठती है। नाम बदनाम किया तो बहुत सजा खानी पडेगी। इसलिए बच्चें, मुझ अपने सदगुरू के निन्दक मत बनना। नहीं तो सजायें भी खायेंगे और पद भी कम हो जायोगा।

ता. १३.६.२००३

ड्रामा अनुसार माया ५ विकार तुमको दु:खी बना देते है। तुम जानते हो अभी दु:ख के पहाड गिरने है। विनाश होना है। उस समय खूने नाहेक खेल का पार्ट बजना है। कितनी खून की नदियाँ बहेगी और सतयुग में घी की नदियाँ बहनीं है। खून की नदियाँ बहती है तो हाहाकार हो जाता है। बहुत दु:खी होते हैं।

ता.१८.६.२००३

माया बडी प्रबल है। याद करने नहीं देगी, विघ्न डालती रहेंगी। बाबा से बेमुख करेगी। परन्तु पुरूषार्थ पूरा करना है। पक्का महावीर बनना है। योग ऐसा रहना चाहिए जो माया कभी हिला न सके।

ता.१०.७.२००३

"किनकी दबी रहेगी धूल में किनकी राजा खाए ...." यह स्लोगन सदा याद रखो क्योंकि अभी दु:ख के पहाड़ गिरने है. सबका मौत होना है।

ता.११.७.२००३

कोभी बात आ जाए, हिमालय पहाड़ से भी बडी हो लेकिन बाबा कहा और पहाड़ रुई बन जायेगा। राई भी थोडी मजबूत, कडक होती है, रूई समान हल्की हो जायेगी।

ता.१.८.२००३

सेवा तो सब करते हैं लेकिन जो करते भी सदा निर्विघ्न रहते है, उसका बहुत महत्व है। सेवा के बीच में कोई भी प्रकार का विघ्न आया तो सेवा खण्डित हो गई। अखण्ड सेवाधारी कभी किसी विघ्न में नहीं आ सकते। जरा संकल्प मात्र भी विघ्न न हो। सब व्यर्थ चक्रों से मुक्त रहो तब सफल और अखण्ड सेवाधारी कहेंगे।

ता.१२.८.२००३
नीचे रहेंगे तो शिकारी शिकार कर देंगे। उपर उड़ते रहेंगे तो कोई कुछ नहीं कर सकता।

ता.२१.८.२००३
जिसके भी घर में कलह होती है कहा जाता है कलह-क्लेष से पानी के मटके भी सूख जाते हैं। फिर विघ्न डालने वाले पर दोष पड़ जाता है। ड्रामा अनुसार उनकी बुध्दि का ताला बन्ध हो जाता है। कुछ भी बोल नहीं सकेंगे। अगर जाकर निन्दा करेंगे तो गला घुट जाता है। सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये। यह तो सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरु है। बाप कहते है अगर मेरी निन्दा करायेंग तो उंच पद पा नहीं सकेंगे। विनाश की रिहर्सल भी होती रहेगी।

ता.२८.८.२००३
सहनशक्ति ही सर्व विघ्नों से बचने का कवच है। जो यह कवच नहीं पहनते वह नाजुक बन जाते है। फिर बाप की बातें बापको ही सुनाते हैं, कभी बहुत उमंग -उत्साह में रहते,कभी दिलशिकस्त हो जाते।

ता.३०.८.२००३
कोई भी विघ्न में संशय नहीं उठाना है, ड्रामा की निश्चित भावि समझ फकुर में रहना है, फिक्र नहीं करना है।

ता.१८.९.२००३
तुम डबल अहिंसा वाले हो, राज्य लेते हो परन्तु कोई हथियार आदि नहीं है। पवित्र रहते हो। वह सब हैं हिंसक। एक तो विकार में जाते हैं, काम कटारी से एक दो को दुःख देते है और फिर आपस में लड़ते-झगड़ते भी रहते है। आजकल कितने दुःख के पहाड़ गिरते हैं। मनुष्यों में क्रोध कितना भारी है। अपने आपको आपेही चमाट मारते हैं। सबकी ग्लानी करते रहते हैं।

ता.२४.११.२००३
परिपूर्ण अवस्था अन्त में होगी। इस समय कोई भी अपने को परिपूर्ण कह न सके। यह नुकसान हुआ, कोई खिटपिट हुई, अखबार में बी. के. के लिए हाहाकार हुआ, यह सब भी कल्प पहले हुआ था। फिक्र की क्या बात, १०० परसेन्ट अवस्था अन्त में होनी है।

ता.२३.०२.२००४
हंस बनने में भी माया के बहुत विघ्न पडते हैं। कुछ न कुछ गिरावट आ जाती है। मुख्य गिरावट आती है देह-अभिमान की। इस संगम पर ही तुम बच्चों को चेंज होना है। जब तुम हंस बन जाते हो तो फिर हंस ही हंस हो।

ता.२६.०२.२००४
बहुत माया के तूफान आते हैं, विकल्प आते हैं। न समझने के कारण लिखते हैं बाबा इसमें पाप तो नहीं लगता? बाप कहते हैं, नहीं। पाप तब होगा जब कर्मेन्द्रियों से विकर्म करेंगे।

ता.१९.०६.२००४
जो परिस्थिति वा व्यक्ति निमित्त बनते हैं उनकी इच्छा और उनके मन की भावना की महसूसता । परिस्थिति के पेपर के कारण को जान स्वयं को पास होने के श्रेष्ठ स्वरुप की महसूसता हो कि स्वस्थिति श्रेष्ठ है, परिस्थिति पेपर है- यह महसूसता सहज परिवर्तन करा लेगी और सच्चे दिल से महसूस किया तो दिलाराम की आशीर्वाद प्राप्त होगी।

ता. १६.८.२००४
चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों, समस्याओं के अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार कर लो जैसे खेल-खेल में पार कर रहे हैं। चाहे बाहर से रोने का भी पार्ट हो लेकिन अंन्दर हो कि यह सब खेल है-- जिसको कहते हैं ड्रामा और ड्रामा के हम हीरो पार्टधारी हैं। हीरो पार्टधारी अर्थात एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले। इसलिए कड़ी समस्या को भी खेल समझ हलका बना दो, कोई भी बोझ न हो।

ता. १८.०८.२००४

कोई माया के तूफानों से हार खा लेते, यह सब देखते हुए भी बाप को चिंता नहीं होती क्योंकि बाप जानते हैं यह सतयुग की राजधानी स्थापन हो रही है। फिर भी बाप शिक्षा देते हैं-- बच्चे, जितना हो सके याद में रहो। माया के तूफानों से डरो नहीं। तुम्हारी अवस्था ऐसी मजबूत होनी चाहिए जो कोई माया का तूफान हिला न सके। रावण कोई और चीज नहीं है वा कोई मनुष्य नहीं है। ५ विकारों रूपी रावण को ही माया कहा जाता है।

ता.९.०१.०६
माया बहुत कडी है किसको भी छोडती नहीं। यह बाप अच्छी रीति जानते है
--माया एकदम कच्चा पेट में डाल देती है।
बाप बच्चों को खबरदार करते है। माया से संभालना है। माया ऐसी है किसी न किसी रूप में एकदम हप कर लेती है। फिर भल बाप समझाते है तो भी बुध्दि में नहीं बैठता। इसलिए बाप कहते है कुछ भी भुल आदि होती है तो साफ साफ बताओ, छिपाओ मत। नहीं तो सौ गुणा पाप हो जायेगा। वह अन्दर में खाता रहेगा।

ता.१४.०१.०६
बच्चे नीचे-ऊपर होते रहते है। इसमे भी माया जिसको समर्थ पहलवान देखती है, उनसे ही लढाई करती है। महावीर हनुमान दिखाया है ना। उनको भी हिलाने की कोशिश करती है, इस समय ही सबकी परिक्षा लेती है। जो जितना स्मृति में रहते है, निरन्तर बाप को याद करने की कोशिश करते है वह अच्छा पद पा सकते है।

ता.१८.०७.२००६
लुन पानी हो आपस में ही झगडते रहें। डिससर्विस करने वाले का पद भष्ट हो जाता है। मनुष्य-मनुष्य में कितने लुन पानी हो रहते है। बात मत पुछो। तुम्हारा धन्दा है उनको बहुत मीठा बनाना। कोई ऐसे फिर लुन पानी बनने वाले मिल जाते है तो कहते हैं भावी। यह भी सहन करना है। हमको फिर भी प्यार से नमक को चेंज कर मीठा बनाना है।

ता.१९.०७.२००६
एक तो रावण का जेल फिर रावण के मतपर चलने वालो का जेल। भक्ति की भी जंजीरें, गुरूओं की जंजीरें फिर पति की भी जंजीरें। रावण की मत पर तुम कितने दु:खी होते हो।
जो सच्चे होते उनकी अवस्था पक्की रहती है। जरा भी विकार की तरफ ख्याल नहीं जाता है। ऐसे बच्चों पर अगर कोई जबरदस्ती जुलुम करते है तो उसका पाप नहीं चढ़ता है। पुकारती है बाबा हम तो आपके है। शरीर तो जैसे मुर्दा है। ऐसे निश्चयबुध्दि वाले जो हैं वह बडा ऊँच पद पा लेते है।

अव्यक्त संदेश

ता.१३.३.९७
अभी ऐसे ही जो भी दृश्य होंगे, वह अचानक ही होंगे। जब समय पूछकर नहीं आना है, समाप्तिपूछकर नहीं आनी है तो जो भी दृश्य होंगे, चाहे सेवा में, चाहे जो भी ब्राह्मण परिवार में वह सब अचानक होंगे।

ता.१०.५.९७
अब तो हर तरफ एलग-एलग परिस्तिति द्वारा हलचल होनी ही है इसीलिए सदा हर हालत में अचल-एडैल रहना है --- यहीं मास्टर त्रिकालदर्शी की निशानी है।
ता.७.८.९७
बापदादा ने तो पहले ही सुनाया है की दिन-प्रतिदिन ये सब बातें व ये हालातें तो अति में जानी ही हैं। ऐसे समय पर तो आप ब्राह्मण बच्चों को पावरफुल योग के कवचधारी बनना ही सेफ़्टी है।

ता.२८.१.२००१
प्रकृती को अपना कार्य करना ही है क्योंकि ड्रामा में प्रकृति का भी विशेष पार्ट है। बापदादा ने तो पहले ही कहा है कि अब तक तो एक-एक तत्व अपना पार्ट बजाने की रिहर्सल कर रहे हैं । अभी तो आगे चल रीयल होना है। अभी तो अलग-अलग हरेक तत्व कब कोई, कब कोई अपना रूप दिखा रहे हैं लेकिन आगे तो पाँचों ही तत्व इकट्ठा अपना पार्ट बजायेंगे। इसलिए बापदादा बार-बार बच्चों को कहते हैं कि सदा अंगद मिसल अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रहो। यह सब साइड सीन्स हैं उसको साक्षा होकर देखते चलो। अशरीरी होकर उडते चलो।

समय अनुसार अभी तो बच्चों को स्व-चितन, स्व-मान, स्व-स्वरूप में ही रहमा है।

ता. ९.८.२००२
अपने दिल में पक्का वायदा करो, कोई भी बड़े ते बड़ी समस्या आवे लकिन मैं समाधान स्वरूप बन विजयी बनूँगी। अपवे को म्टाऊंगी, भदसूंगी। यह वायदा ऐसा पक्का करो जो आपका ये वायदा नैचुरल संस्कार बन जाए।

ता.२८.८.२००३
सदा बाबा के साथ रहो, कम्बाइन्ड रहो तो कोई भी शक्ति आपको बाबा से अलग कर नहीं सकती। अकेले होते हो को मा.I, प्रकृति, समस्यायें परेशान करती है।

स्व-प्रबंन्धन नेतृत्व : पान क्र-२३

एक बार दो व्यक्ति एक जंगल से गुजर रहे थे कि अचानक उन्होंने शेर की आवाज सुनी। अनमें से एक ने खतरे को सूँग कर, अपने सैधारण जूते उतीर कर दौडों लिगाने वाले जूते पहन लिए। दूसरे व्यक्ति ने आश्यर्यचकित होकर पूछा- तुम क्या समझते हो, यह दौडने वाले जूते पहन कर तुम शेर से तेज दौड़ सकेगे? पहले व्यक्ति ने उत्तर दिया, मैंशेर से तो नहीं, लेकिन तुमसे जरूर तेज दौड़ लूँगा।

पान क्र-४९

एक बार समुद्र में एक भयानक तूफान आया। जिलमें अनेक जहाज अपना रास्ता भूल गए और इधर - उधर भटकने लगे। इनमें एक युध्दपोत के कैप्टन ने अपने अधीनस्त एक अधिकारी को आदेश दिया कि वह जहाज के ऊपर जाए तथा यह पता लगाए कि उनका जहाज इस समय कहाँ है और उसकी सही दिशा भी निर्धारीत करे। वह अधिकारी बड़े जोश के साथ उपर गया। वहाँ उसने दिशा का अनुमान किया और उस आधार पर अपने जहाज की दिशा बदल दी। फिर उसने अपने इधर - उधर चारों ओर निगाह दौड़ाई। अपने जहाज के मार्ग पर दूर कही उसे एक रोशनी दिखाई पडी जो स्थिर थी। यह देखकर वह नीचे उतरा और जहाज के कैप्टन को सुचित किया। जहाज के कैप्टन ने उसे कहा कि वह दुसरे जहाज को संदेश भेज कर कहे कि वह अपना मार्ग २० डिग्री बदल ले। उस अधिकारी ने जब यह संदेश भेजा तो तुरंत ही उसे उत्तर मिला कि तुम स्वयं अपना जहाज २० डिग्री मोड ले। उस अधिकारीने यह संदेश अपने कॅपटन को सुनाया। कॅप्टन सून कर क्रोधित हुआ और बोला कि वह अपने आपको क्या समझता है जो हमे रास्ता बदलने के लिए कह रहा है। कॅप्टन ने अपने अधिकारी को कहा कि इस बार वह कॅपटन के नाम से संदेश भेजे। अधिकारी ने कॅप्टन की आज्ञा का पालन करते हुए दुसरा मैसेज भेजा कि इस युध्दपोत का कॅपटन कह रहा है कि तुम अपने जहाज का रास्ता बदल लो। इसका भी तुरंत उत्तर मिला जिसमे यह कहा गया कि श्रीमान मै तो चाहे सेकंड क्लास का अधिकारी हुँ फिर भी आपको सलाह देता हुँ कि आप अपने युध्दपोत का मार्ग २० डिग्री बदल ले। इस उत्तर ने कॅपटन के क्रोध को और अधिक भड़काते हुए आग मे घी का काम किया। उसने क्रोध मे कापते हुए अपने अधिकारी को कहा कि अब तुम यह

संदेश भेजो कि यह एक युध्दपोत है इसलिये यह अपना रस्ता नही बदलेगा। फिर तुरंत उत्तर मिला कि मै तो लाईट हाऊस हुँ। इस उत्तर ने युध्दपोत के कॅप्टन कि मानसिकता को बदल दिया।

वर्ल्ड रिन्युअल पान क्र : २६

पानी से भरा ग्लास हाथ में पकडे हुऐ प्राध्यापक क्लास में प्रविष्ट हुए और सभी विद्यार्थी देख सके इतना ऊँचा उठाते हुए सवाल किया के आपके अनुमान से उस ग्लास का कितना वजन होगा ?
जवाब आया ५० ग्रॅम... , १०० ग्रॅम... , १२५ ग्रॅम... ,
अध्यापक बोले सच यह है की जब तक मै इसका वजन न करे कह नहीं सकता इसका वजन कितना है। परन्तु मै इसे ऐसे ही कुछ समय उपर पकडे रहूँ तो क्या होगा?
कुछ नहीं बच्चोंने कहाँ
अच्छा ऐसे ही एक घंण्टे तक पकडे रहु तो क्या होगा? अध्यापक ने पुछा।
एक विद्यार्थीने जवाब दिया आपका हाथ दर्द करने लगेगा।
आपने ठिक कहाँ। अब बताओ यदी पुरे दिन भर केलिए ऐसे ही पकड के रहूँ तो क्या होगा?
आपकी बाहे अकड़ जायेंगी, शायद आपके हाथ में जोरका दबाव आयें या फिर लकवा भी आ सकता है और फिर आपको इलाज के लिए हॉस्पिटल भी जाना पडे। सभी विद्यार्थी आवेश मे आकर हसने लगे।
बहोत अच्छा, परन्तु इन सभी बातों कें दौरान क्या ग्लास का वजन बदला?
अध्यापक ने पुछा।
नहीं तो फिर क्या कारण होगा बाहों में दर्द होने का या मासपेशीयों में तनाव
उत्पन्न होने का? इस सवालसे विद्यार्थी में हडबडी मची

ग्लास निचे रखे एक विद्यार्थी ने कहा। जिवन की समस्या भी ऐसे ही है।

बुध्दि में कुछ क्षणो के लिए रखो तो ठिक लगता है लेकिन जादा समय सोचो तो सिर दर्द होने लगता है। और जादा समय सोचो तो ऐसे अनुभव करोंगे जैसे शक्तिहीन हो गये है और कोई काम कर नहीं सकेंगे।

यह बात जरूरी है की आपकजिवनमे आनेवाली समस्यापर विचार करे लेकिन इससे भी महत्व पूर्ण बात है की ऐसे बातों को रातको सोने के पहले बिंदी लगाकर समाप्त करे। उससे आपके मन में तनाव नहीं पैदा होगा लेकिन आप जब सुबह उठेंगे तो उल्लासित और तनदुरुस्त रहेंगे जिससे आप आने वाली समस्याओं का सामना धैर्यता से कर सकेंगे।

विघ्न विनाशक बनो

१) यज्ञ में सबसे बड़ा विघ्न है बच्चों का मै पन और मेरा पन मैने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ ... यह में पन आना - इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुध्दि का अभिमान, सर्विस का अभिमान और दूसरा मेरा पन अर्थात मेरा शरीर, मेरा सम्बन्ध -यह मेरापन भी बहुत विघ्न डालता है।

२) अपने पुराने स्वभाव और संस्कार, जो कभी-कभी नये जीवन में इमर्ज हो जाते हैं। अपना कमजोर संस्कार दूसरे के संस्कार से टक्कर खाता है। यह कमजोरी विशेष लक्ष्य तक पहुँचने में विघ्न डालती है। फुल पास के बजाए पास मार्क दिला देती है।

३) आपस में जो व्यर्थ समाचारों की लेन-देन चलती है, यह आदत जो बढ़ती जा रही है- यही तपस्या में बहुत बड़ा विघ्न है।

४) यदि कोई भी बात में किसी भी प्रकार की जरा भी फीलिंग आती है - यह क्यों, यह क्या .... तो फीलिंग आना माना विघ्न रूप बनना। सदैव यह सोचो कि व्यर्थ फीलिंग से परे, फीलिंग-प्रूफ आत्मा हूँ. तो मायाजीत, विघ्नजीत बन जायेंगे।

५) किसी भी विघ्न को चेक करो तो उसका मूल कारण प्रीत के बजाए विपरीत भावनायें ही होती है। भावना से भाव भी बदल जाता है। अगर किसी आत्मा के प्रति किसी भी समय ईर्ष्या की भावना है अर्थात अपनेपन की भावना नहीं है तो उस व्यक्ति के हर चलन, हर बोल से मिस-अन्डरस्टेण्ड का भाव अनुभव होगा और वही विघ्नों का कारण बन जायेगा।

६) जब आपकी कथनी और करनी एक नहीं रहती। कहने और करने में अन्तर हो जाता है तब विघ्न पड़ते है। यदि कहते हो कि यह विकार बुरी चीज है, औरों को भी सुनाते हो लेकिन खुद घर गृहस्थी से न्यारे होकर नहीं चलते हो तो विघ्न पड़ते हैं इसलिए जो कहते हो वहीं करो।

७) बुध्दि को जो महामंत्र मिला हुआ है उसमें बुध्दि मगन न होने के कारण एनेक विघ्न आते है।८) घर में रहते यदि अपने शक्ति स्वरूप की स्मृति नहीं रहती है तो कर्म-बन्धन विघ्न डालते है। फिर यह आवाज़ निकलता

है कि क्या करें ? कर्म-बन्धन है। इस बंधन को कैसे काटे? लेकिन विघ्नों में चिल्लाने वा घबराने के बजाए शक्ति रूप बन उनका सामना करो तो विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

९) प्रैक्टिकल दिनचर्या में बहुत करके एक शब्द विशेष विघ्न रूप बनता है --वह है रोब। और रोब आने के कारण रूहाब नहीं रहता है। रोब भी तब आता है जब स्वयं को सेवाधारी नहीं समझते हो। सेवाधारी समझो तो रोब नहीं आयेगा।

१०) विघ्नों की लहर तब आती है जब रूहानियत की करफ फोर्स कम हो जाता है।मनन शक्ति व्दारा स्वयं नें सर्व सक्तियां भरने वा मगन शक्ति व्दारा स्वयें में सर्व शक्तियां भरने वा मगन अवस्ता में स्थित नहीं रहते होष इसलिए विघ्न पड़ते है।सहन-शक्ति और समाने की सक्ति धारण करो तो स्वभाव-संस्कार से टक्कर होगी।

११) विघ्न विनाशक बनने का सहज साधान है इ क्वेश्चन मार्क को सदा के लिए विदाई देना और फुलस्टॉक करना।

१२) विघ्न विनाशक बनना है तो सर्व की दुआयें लो। मात-पिता की दुआएं और साथ में सर्व के सम्बन्ध में आने से सर्व व्दारा दुआएं।

अगर स्वयं कमजोर बनते हो तो विघ्न शक्तिशाली बन जाते है और स्वयं शक्तिसाली हो तो विघ्न कमजोर बन जाता है।

जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, वैसे अपना शक्तिसाली रूप बना लो। अगर परिस्थिति सामना करने की हैष तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ. अगर परिस्थिति सहन करने की है तो सहन शक्ति स्वरूप हो जाओ।

में पन और मेरे पर के कारण जो विघ्न पड़ते हैं, उन्हें समाप्त करने के लिए 'अनेक मेरे-मेरे' को 'एक मेरा बाबा' बदल दो। और जब मैं पन आये तो यह एक शब्द याद रखो कि में निमित्त हूँ। निमित्त बनने से निराकारी, निरंहकारी और नर्मचित, निःसंकल्प अवस्था में रह सकेंगे।

कोई कितना भी विकराल रूप की परिसतिति हो या बड़े रूप की समस्या हो लेकिन आप अपनी ऊंची स्टेज पर स्थित रहो तो वह बिल्कुल छोटीनगेगी।

यदि कोई भी परि[illegible]इति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनते हैं तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले.

विघ्न को देख अपनी स्टेज से नीचे नहीं आओं, कोई भी तूफान, बुध्दि में तूफान पैदा न करे क्योंकि तूफान, तूफान नहीं, तोहफा है। जो तूफान को तूफान समझते हैं वो हलचल में आते हैं और जो तोहफा समझते हैं, वह हुल्लास में रहते हैं।

जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे। लेकिन नथिंगन्यु की स्मृति से सदा हर्षित रहने वाले ही वास हो सकेंगे।

दिल की कई बातें

बाबा कहते है, बच्चे, साफ दिल बनो अर्थात दिल साफ होना चाहिए। साफ दिल को कहते हैं नियत साफ। आमतौर पर लोग कहते है, कि अमुक की नीयत खराब हैं। सब से पहली बात है कि दिल साफ हो। दिल साफ माना हमें किसी को रंज नहीं करना चाहिए। किसी के अवगुण हमें मन में नही खरने हैं। अगर हम किसी के अवगुण मन में रखते हैं तो हमारा ही दिल साफ नही रह सकता। अगर हमारे अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भी हैं तो भी दिल साफ नही हो सकता। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, दिल साफ रखो तो मुराद हासिल। आमतौर पर आदमी यह सोचकर चलाकी करता है कि दूसरो को पता नहीं लग रहा है कि मै क्या कर रहा हूँ। जो व्यक्ति छल, कपट, बनावट करता है उसका मन ठीक नही रहता भटकता रहता है। उसका योग कभी ठिक नही लगता है और वह भगवान के नजदीक भी जा नहीं सकता। जिसका मन जितना सरल होगा, साफ होगा उतना बाब की कृपा उस पर होगी। सबसे पहले हमारा दिल, मेरा दिल बिल्कुल साफ था। जैसे हम रोज दांत साफ रखते हैं, शरीर साफ रखते हैं, वैसे हि हमें दिल को भी साफ रखना चाहिए।

दूसरा बाबा कहते है, सच्चे दिल पर साहिब राजी साफ दिल में और सच्चे दिल में अंतर है, क्या अंतर है ? कई बार हम भगबान से भी छिपाते है कोई गलत काम कर रहे होंगे लेकीन अंतर आत्मा की, आवाज कह रही होगी, की यह गलत कर रहे हो फिर भी हम समजते है की, बाबा देखते थोडे ही है ? परंतु बाब कहते है मेरे पास भी टी. वी. सैट है। आप क्या करते हो क्या सोचते हो वो सब मुझे दिखाई पडता है. इस दुनियावी टी.वी.पर केवल एक्शन्स (अदायें) आती हैं, इस टी.वी. पर समझते हैं कि कोई देख थोडे ही रहा है ? कोई भी चीज बाबा से छिपी नहीं है कई दफा हम यह समझते है कि कोई देख थोडे ही रहा है, सूक्ष्मलोक में है हम करेंगे तो हम ही पायेंगे। कोई बात नहीं, जब समय आयेगा तब देखा जायेगा। अगर व्यक्ति यह भूल जाता है कि भगवान हमें देख रहा है अथवा हम जो भी करे हैं उसको दिखायी पडता है तो वह उल्टे काम करने लग जाता है बाबा ने कहा है कि सच्चे दिल पर साहिब राजी उमंग, उत्साह, राजी, खुशी जो जीवन के लिए जरुरी हैं वो तब ही होंगे जब हमारा दिल सच्चा होता है क्या उस सच्चे

परमात्मा से भी हम सच्चे न रहें ? जन्म - जन्मान्तर चलाकी, मक्कारी, छल, कपट, धोखा करते आये हैं और समझ्ते हैं कि हमारे जितना चालाक कोई है ही नहीं लेकिन यह नहीं समझते हैं कि हम किसी के सामने चालाकी कर रहे हैं ! अगर गलती हो गयी, उसके लिए हम बाबा, शिक्षक,सद्गुरु के सामने माफी मांग लेते हैं तो बाबा हमें क्षमा कर देगा जैसे छोटे बच्चे अपने माँ - बाप के सामने कान पकड कर कहते हैं कि मेरे से गलती हो गयी, मुझे माफ करो तो माँ - बाप भी खुशी - खुशी माफ कर देंगे और कहेंगे कि दुबारा ऐसी गलती नही कराना इसी प्रकार, बाबा भी माफ कर देता हैं जब तक हम सच्चे बाप के साथ सच्चे नही बनेंगे तब तक हमारे जीतन में धारणायें होंगी ही नहीं कई लोग कहते हैं कि हमें ईश्वरीय धारणायें नहीं होती, इसका अर्थ यही है कि उनके दिल में सच्चाई नहीं है खास करके इस सच्चे नही I

तीसरी बात है रहम दिल बनना बाबा कहते है, आप बच्चों को हरेक पर रहम रखना है दुनिया वाले संसार में फँसे हुए हैं, अपने संस्कारों में फँसे हुए हैं उनको दुख कर कभी - कभी आपको गुस्सा भी आ सकता है या नफरत भी पैदा हो सकती है उनसे मुँह भी मोड सकते है बाबा कहते हैं बच्चे, यह पुरानी दुनिया है, हरेक अपने जन्म - जन्मानतर के पुराने संस्कारों में फँसे हुए हैं आप रहम दिल बाप के बच्चे हो भगवान को सब क्या कहते हैं ? दुःखियों पर दया करो आप दयालु हो, कृपालु हो, रहम दिल हो,आप कृपा के सागर हो, दया के भंडार हो हम पर दया करो बाबा कहते है, आप भी मेरे बच्चे हो, इसलिए आप भी सब पर रहम करो, दया करा, कृपा करो आप जब मास्टर रहम दिल बनेंगे तब घृणा, व्देष, ईर्ष्या, खत्म हो जायेगे.

बाबा कहते है, पहले अपने आप पर रहम करो लोंग यह नही समजते की, हमे स्वयंम पर रहम करना है जब तक हमे स्वयंम पर रहम नही करेंगे,स्वयम को विकारोंसे छुडाने का प्रयास नही करेगे तो कैसे हम रहम के पात्र बनेगे मुझे अच्छा बनना हैं मुझे बाबा की आश पुरी करनी है तब तक भगवान भी रहम नही करेगा ईस रिती से स्वयंम को परीवर्तन करने का दृढ संकल्प करना हि स्वयंम पर रहम करना है रहम का अर्थ यह नही है की कोईने गुस्सा किया हमने उस पर रहम किया हमारे रहमने उसके विकर्म बढाने के लिये अवसर दिया. रहम करने का अर्थ यह नही है की, गलत रिती से उसका प्रयोग करे बल्की आपणी रुहानी शक्तीसे परिवर्तन करना और आगे उसे घृणा, व्देष अदि नहि करना. रहम भी पात्रोपर करो अपात्रो पर किय गये रहमसे भी अपने ही पाप का खाता बढता जायेगा.

अगर भगवान के उपर, बाबा के उपर रिंगचेक मात्र भी विश्वास हि हुवा नही निश्चय डगमग हुवा नही तो कूछ भी हो नही सकता. बाल भी बाका हो नही सकता, जिसकी स्थिती डगमग नही हूई हो, बाबा की याद कायम रही हुई हो तो उसको विकराल ते विकराल परिस्थिती भी जरा भी छु नही सकती. जब सर्व शक्तीवान भगवान हमारे साथ है तो कभी भी जिवन में घबराने की कोई बात नही.

स्पार्कलरस् के अनुभव

एक बार प्रकाश और उसके पांच सहकर्मी ऑफिस काम से टूर पर गये थे। उनमे से एक ब्रह्माुमार था। लैटते समय शाम हो गई बारीश के दिन होनेके कारण जल्दी अंधेरा छाने लगा था। प्रकाशभाई अपने साथी के साथ एम्बेसेडर कार से जा रहे थे। रास्ते में एक नाला था, जिसमें ४/५ इंच पानी था लेकीन जैसे ही हम आगे बढने लगे पानी बढ़ने लगा, गाडी नाले का बिच पहुची थी की बिच में ही रुक गयी। ड्रायव्हर ने गाडी को चलाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नाकामयाब रहा तो हम सभी मिलकर गाडी को ढकेलकर किनारे लानेकी कोशिश करने लगे लेकिन अचानक पानी इतनी जोरसे बढता गया के हमे अपने आपको उस पानी के बहाव में संभालना मुष्किल हो रहा था। अब समय गवाना भी ठिक नहीं था। हममे से प्रकाशभाई को थोडा तैरना आता था उन्होंने कहाँ हम शिवबाबा को याद करते करते आगे बढेंगे बाबा हमे जरूर बचायेंगे। उसके विश्वास देखकर हम सभी ने भी निर्णय कर लिया के जैसे-तैसे हम पानी से तैरते जायेंगे और प्रकाशभाई के साथ हम सभी ने आगे बढना सुरु किया। कहते है की समस्यायें आती है तो एक साथ आती है। अब पानी के बहाव के साथा पेड की टाल-टालीयाँ, पौधें जिनमें बडे-बडे काटे थे और जहरीले सांप बहकर आने लगे। इसके बावजुद भी प्रकाशभाई और उसके साथी आगे पढ़ते रहे और आखिर किनारे पर पहुच गये। आज भी जब उस दिन की याद आती है तो सभी गदगत हो ते है और मुख से लब्ज आते है सिवबाबा की ही कमाल है।

२) आज सेन्टर्स पर रहनेवाली कितनी ही टिचर्स या ज्ञान में चलनेवाली ऐसी कितनी मातायें कन्यायें है जो दिकने में बहुत सुंदर है। उनके सामने विकारी मनुष्य कारण परिस्थितियाँ उसी मेरे एक का जिक्र अब हम यहाँ कर रहे है।

ऐक बार लक्ष्मी बहन सेवा अरथ किसी स्थान पर हयी थी वहाँ एक भाई ने लक्ष्मी बहन को बहित तंग किया. वो जहाँ जाती वह बी उसके फीछे जाता। वो कहीं रुकती तो वह भई रुक जाता और देखता रहता. पहले तो

लक्ष्मीबहन ने बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया। डोन्ट कर देती । लेकिन वो सिलसिला बढ़ता ही गया. फिर लक्ष्मी बहन ने सोचा कुछ तो करना ही पडेगा। उनहोंने उस भाई के प्ती क्रोध वा घृणा करने के बजाय उस भाई के प्रति शुभ भावना कल्याण की भावना रकी. सकारात्मक चिन्तन किया के ये मेरा किसी जन्म का भक्त होगाइसलिए बार-बार मेरे दर्शन करने चला आता है। हर बात को सच्चाई से श्वबाबा के सामने रखना। शाम के योग के समय स्वमान में स्तित रहकर बाबा से पवित्रता की शक्ति लेकर उस आत्मा को पवित्रता के vibration देने का प्रयोग किया। कुछ दिन तक लगातार यह प्रयोग करने के बाद रिझल्ट यह था के उस भाई में परिवर्तन आते गया और लक्ष्मीबहन बाबा ने भरी शक्ति का प्रभाव देखकर आपने में मगन है गयी।

शान्तीबहन १२ साल से एक ऑफिस में काम कर रही ती उनकी साथी दुर्गाबहन जो कि हमेशा गुस्से में रहती थी। दुर्गाबहन शान्तिबहन की सिनीयर होने के कारण छोटी से छोटी हलती होने पर भी इतना हंगामा मचाती कि ऑफिस के सभी लोग उसस् परेशान हो जाते थे फिर भी दुर्गाबहन अपनी ऑउसि में धाक जमा रहे इसी पुरुशार्थ में रहती । शुरु-शुरु में श्न्तिबहन को उससे काफी तकलीफ होती थी और गुस्सा भी आता ता लेकिन जुनियर होने के नाते चुप रह जाती। ऑफिस काम के दजहसे दुर्गाबहन से पाला पडता ही था।
कुछ समय बाद शान्ति बहन शान्तिबहन को ज्ञान प्राप्त हुआ और शान्तिबहन रोज अपने प्रॉब्लम्स बाबा के सामने रखती थी। बाबा को सब कुछ बताकर राय सलाह करती थी। इसके कारण दुर्गाबहन गुस्सा होने पर भी वह उनसे सान्ति से पेश आती थी और ऐसा व्यवहार करती जैसे कुछ हुआ ही न हो। कॉ बार अपसेट भी हो जाती लेकिन मनमें दृढ निस्चय कर रखा था के किसी हालतमें सुखसे कुछ नहीं बोलना है मुझे चाहे कुछ भी हो जाये परिवर्तन करना ही है। इसका प्भाव दुर्गाबहन पर तो होना ही था आहीस्ते आहिस्ते दुर्गाबहन का गुस्सा ठंडा होते गया और आज ऑफिस का वातावरण भी परिवर्तीत हो गया।

परिस्थिति का स्व पर प्रभाव के चेकिंग के लिए चार्ट: माहे ऑक्टोबर २००६

अनु क्र	तारीख	मेरे सामने कितनी समस्यायें आई	इसमे कितने पास हुए	कौनसे पांईट गुण वा शक्ति को युज किया	अपयश का कारण	ज्ञानका कोनसा पांईट का अभ्यास आवश्यक	समस्या कौनसी थी
१	३.१०.०६	एक	००%	--	समाने की शक्ति की कमी	पास्ट सो पास्ट	पारीवारीक
२	६.१०.०६	एक	१००%	मुझे मोल्ड होना है	---	---	ब्रा. परीवार
३	१६.१०.०६	एक	५०%	हाजी का पाढ	घटना का मन पर प्रभाव रहा	जो हुआ सो ड्रामा	ब्रा. परीवार
४	१९.१०.०६	एक	९०%	--	अपना पन	हर एक का पार्ट अपना है	पारीवारीक
५	३०.१०.०६	एक	१००%	इसमे भी कल्याण है	---	---	पारीवारीक

नाम : बि.के. अनिल
सेंटर : पंचवटी नासिक, महाराष्ट्र राज्य

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre)
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414003497, +919414082607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com
sparc@bkivv.org